वीर शिरोमणि राव हेमा गहलोत : मृत्यु एवं दाह संस्कार

राव हेमा गहलोत के जन्म व मृत्यु की तिथि के बारे में राव बहिया मौन हैं परंतु राव हेमा गहलोत की मृत्यु राव चूंडा जी के समय व दाह संस्कार ग्राम मण्डोर में हुआ की जानकारी उपलब्ध है। राव ख्यातों के अनुसार राव हेमा गहलोत अपने पिताजी राव पदम जी, दादा राव जेहड़ जी, माता गंवरी, दादी हरजोत के पीछे गंगा प्रसादी मण्डोर परगने में वि. सं. 1451 में की। अतः राव हेमा गहलोत वि. सं. 1451 (1394 ई.) तक जीवित थे। ग्राम मण्डोवर आज की जूनी बस्ती है जो मण्डोर गार्डन के पास व भैरव मंदिर के पीछे का स्थान है। राव चूंडा जी द्वारा अपने इकरार के माफिक राव हेमा गहलोत को मण्डोर से सालोड़ी तक की कृषि भूमि माफी दी थी। जो उनका निवास स्थान था। यहीं पर चैत्र वदी प्रतिपदा वि. सं. 1446 (12 मार्च 1389, सोमवार) के दिन भैरव व कुल देवी की थापना की थी व बेरे का निर्माण करवाया जो कालान्तर में भैरू बेरा फिर भैरू बावड़ी से प्रसिद्ध है।

राव हेमा गहलोत की मृत्यु उपरान्त दाह संस्कार भैरव मंदिर व भैरू बावड़ी के सामने बनी एक थान की जगह हुआ होगा क्योंकि राव हेमा गहलोत को भैरव का इष्ट था व अपनी खुद की कृषि भूमि होने के कारण इसी स्थान पर किया। यह स्थान आज भी भोमियाजी के थान के नाम से जाना जाता है। मण्डोर के बुजुर्गों व भैरव मंदिर के पुजारी (श्रीमती मोहिनी

मण्डोर भैरव मन्दिर के सामने स्थित वह स्थान जहाँ राव हेमा गहलोत का दाह-संस्कार हुआ

देवी पत्नी भजन सिंह गहलोत) के अनुसार मंडोर उद्यान विकसित होने से पहले इस थान पर भी पूजा की जाती थी। जो आज भी जारी है हाल ही में मण्डोर के गहलोतों द्वारा इस थान का जीर्णोद्धार किया गया है। सैनिक क्षत्रिय समाज के नवदम्पति आज भी शादी उपरांत जात लगाने आते हैं।

राव बहियों के अनुसार राव हेमा गहलोत के वंशज में डूंगर की माता लाछा (पुत्री नाथा कच्छवाहा) पत्नी लीलो गहलोत अपने पुत्र की मृत्यु

भैरव मन्दिर व भैरव बावड़ी (मण्डोर) के बीच स्थित सती स्थल

पर राव रीड़मल जी पुत्र राव चूंडा जी के समय महासती हुई जो भैरव मंदिर व बावड़ी के पास महासती का स्थान आज भी मौजूद है। वहाँ लगे एक पत्थर जिसमें एक औरत अपनी गोद में बच्चे को लेकर बैठी हुई की मूर्ति आज भी मौजूद है। यह घटना राव बहियों के अनुसार वि. सं. 1475-1500 (ई. 1418-1443 ई.) के बीच की होगी। (महासती–महिला अपने पुत्र के देहान्त होने उपरान्त उसके मृत शरीर को अपनी गोद में लेकर सती हो जाना)।

उपर्युक्त विवरण से प्रमाणिकता पुष्ट होती है कि भैरव मंदिर के सामने बने थान के स्थान पर ही राव हेमा गहलोत का दाह संस्कार किया गया। इस स्थान पर उनके परिवार द्वारा एक थान का निर्माण किया। कालान्तर में वंशजों के अलग-अलग स्थानों पर चले जाने से, वर्षों पहले मण्डोर उद्यान बनने पर इस थान पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया और न ही इसे हटाया गया। परन्तु सुबह-शाम मंदिर के पुजारी जो राव हेमा गहलोत के वंशज है, के द्वारा पूजा-अर्चना की जाती रही, जो आज तक जारी है।

"गत 700 वर्षों से मण्डोर की स्वजाति व राजघराने के श्मशान एक ही थे। परंतु 1929 ई. में श्मशान भूमि में एक उद्यान लगाने की योजना बनाई गई। राजाओं का दाह संस्कार जोधपुर में ही किले के पास पहाड़ी पर किया जाने लगा। स्वजाति के स्मारक (ठे. पोकर जी कच्छवाह की छतरी) हटाने का भी सरकारी आदेश हो गया। तब मण्डोर के स्वजाति बंधुओं ने 20-09-1930 ई. में राज्य सरकार के पास प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। जिसका प्रत्योतर (संख्या 146 दिनांक 09-10-1930) देते हुए राज्य सरकार ने लिखा कि उनको नया श्मशान मालदेव तालाब के पास दिया जाता है। जहाँ वह लोग अपनी छतरी बना सकते हैं। यहाँ मालदेव तालाब भी मण्डोर उद्यान में ही प्राचीन राजघराने के श्मशान के पास ही स्थित है।" (बलदेव सिंह कच्छवाह—सैनी क्षत्रिय समाज का इतिहास, पृ. सं.-36/37)

राव मालदेव (संवत् 1647, ई. 1590) से महाराजा तख्त सिंह तक मण्डोर के वर्तमान राजकीय उद्यान में देवल बने हुए हैं। राव मालदेव से पहले के राव चूंडा से राव गंगा तक के दाह संस्कार (1395 ई.-1590 ई.) तक मण्डोर के वर्तमान राजकीय उद्यान में नहीं हुआ। इस उद्यान में सैनिक क्षत्रिय की ही पुरातन श्मशान भूमि व कृषि भूमि थी जो राव चूंडा जी ने राव हेमा गहलोत को माफी दी थी।

इससे यह प्रमाणित होता है मण्डोर के भैरव मंदिर व भैरव बावड़ी के सामने वाली भूमि सैनिक क्षत्रिय गहलोतों की कृषि व पुरातन श्मशान भूमि थी।

❑

वीर शिरोमणि राव हेमा गहलोत का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

राव हेमा गहलोत साहसी, बहादुर व तलवार के ही धनी नहीं थे वह भैरव व कुलदेवी बाण माता के बहुत बड़े भक्त भी थे। उनकी पहचान भक्त के रूप में आज भी प्रतिष्ठित है। उनकी इस भक्ति को उनके वंशजों द्वारा सदियों से संजोये रखा है। ऐसे वीर भक्ति बिरले ही होते हैं जिन्हें सदियों तक याद किया जाता है और उन्हें भैरव के समकक्ष ठहराया जाता है। वीरता व भक्ति का ऐसा संयोग इतिहास में बहुत कम ही मिलता है। उनके इस पौरुष के कारण ही उन्हें राव के रूप में उनकी भक्ति और शौर्य का गुणगान होली के फाग के साथ किया जाता है। राव हेमा गहलोत ने मण्डावर की भूमि को दुर्भाग्य से बचाने के प्रयास में सब कुछ न्यौछावर कर भावी पीढ़ियों के लिए अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया और अपने समाज को उच्च आदर्शों पर स्थापित किया। ऐसे बिरले चरित्र नायक समूचे राष्ट्र के इतिहास में बहुत कम मिलते हैं। आदर्शों पर चलने वाले महापुरुषों की गौरव गाथायें जो व्यक्ति जितनी अपने जीवन भी उतार पाता है, उतना ही बड़ा है। ऐसे महापुरुष आजादी की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति देने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। बहु-आयामी व्यक्तित्व राष्ट्र को सदा-सदा प्रेरणा देता रहेगा। वीर शिरोमणि राव हेमा गहलोत जैसे जुंझारू जीवट के धनी महापुरुष मरकर भी अमर हो जाते हैं। जिन्हें युगों-युगों तक याद रखा जाता है। उनका त्याग, उदारता चिरस्मरणीय एवं वंदनीय है। क्षत्रियोचित सर्वगुण सम्पन्नता

के ये वीर अपने समसामयिक साथियों की सूझ एवं प्रेरणा बनकर सदियों-सदियों तक अपने हृदय के मुग्ध संस्कार से मानव जीवन के पावन मंदिर में व्यक्तित्व और कृतित्व की चरण सीमा मय गौरव का अहसास व अपने तप-ताप से मृत प्रायः जीवन को सजीवनी प्रदान करते हैं। जन-मन के लिए अपनी पीयुष वर्षणीय वाणी के माध्यम से सदा अमृत उडेलते हैं। माताओं द्वारा इन वीरों के समर्पण और वीरता की ममत्व भरी लोरियों गाई गई जो आज भी घर-घर में सुनाई देती हैं। अपने देश पर आये तूफानों का तत्परता से व डटकर अपने विवेक से मुकाबला किया और इन रेतीले टीलें के कण-कण में इनकी वीरता, मान और बलिदान कहानियाँ सुनाई पड़ती हैं। इन वीरों के त्याग व बलिदान की स्मृतियों की अमिट छाप उनके कर्त्तव्य का बोध करवाती है। विकट परिस्थितियों में किस प्रकार अपनी दूरदर्शिता से मातृभूमि, प्रजा व धर्म की रक्षा के लिये जूंझने व मरने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। विदेशी दासताओं से मुक्त करने व हर क्षण प्रजा की खुशहाली के लिए तैयार रहते हैं। इसके लिए मार्ग में हर बाधाओं के चक्रव्यूह को तोड़ने में सक्षम होते हैं। अपने अनुकरणीय धैर्य, सराहनीय विवेक, अद्वितीय सूझ-बूझ व आत्मबल से बाधाओं पर विजयी होना मानो उनके लिए सामान्य कार्य है। ऐसे तलवार के धनी सपूतों की प्रसुता सदा उर्वरा रही है। अपने व्यक्तित्व की गरिमा तथा रणकुशलता के बल पर मण्डोवर को उच्चतम शिखर पर पहुँचा दिया। अपने रणकौशल व दूरदर्शिता से ही इतिहास में अपनी एक बेजोड़ मिसाल कायम की।

मण्डोवर के रजकणों की अरुणिमा में आपके नेतृत्व में, आपके और आपके सुभट्ट साथियों द्वारा मातृभूमि की आजादी के लिये बहाया गया रक्त है, रक्त और आजादी की अभिन्नता है और वह सब आपने कर दिखाया, जो अपेक्षित था। मण्डोवर की धरती आपके प्रति आपके साथी सुभट्टों के प्रति सदा नतमस्तक है। आपकी कड़ी मेहनत, दृढ़ निश्चय एवं अद्वितीय साहस रंग लाया और मण्डोवर की धरती आजादी के आंगन में सुख से श्वास ले सकी।

वीर शिरोमणि राव हेमा गहलोत की सदाशयता, उदारता, त्याग, निर्भीकता एवं निस्पृहता बेजोड़ थी, अपनी श्रमसाधना, तपताप, कर्त्तव्यनिष्ठा से मण्डोर को आजादी मिली। पुनः हिन्दू राष्ट्र की स्थापना हुई। आप ऐसे कार्य के लिए जीवन की पवित्रता, सामाजिक निर्मलता, वैयक्तिक उज्ज्वलता तथा नैतिक उच्चता के धनी थे।

अपने इष्टदेव के विजयी आशीर्वाद को चिरस्थायी बनाने हेतु काला गोरा भैरव जी के स्थापना दिवस पर भैरव के रूप में गहलोत वीर का चयन कर राव महोत्सव की परम्परा शुरू की। भैरव के रूप में राव के राजा अदम्य साहस, शौर्य, बुद्धिमता व वीरता का प्रतीक है।

वीर शिरोमणि राव हेमा गहलोत की पुनीत स्मृति को हरी-भरी बनाए रखने के लिए राव महोत्सव मनाया जाता है।

वीर शिरोमणि हेमा गहलोत की अश्वारूढ़ मूर्ति मण्डोर चौराहा या पास की पहाड़ी पर स्थापित कर उनके वीरत्व का सम्मान करना चाहिए। ❑

राव बहियों में राव हेमा गहलोत की वीरता और शौर्य गाथा

"गजथट घाले गोखरू छड़या भीयाणी घाट।
गंवरी सुत गरजे घणों विकट पांडवों रो पाट॥
राव चूंडा ने तिलक दीनों मण्डोर में राज दीनों।
मण्डोर माय डेरो दीनों जद बाजीया कुचेरा गहलोत"॥
(गंवरी राव हेमा गहलोत की माता का नाम है)

कुचेरा गहलोत—

"गहलोतों री कोढड़ी, सुम समापे आव
बाप्पा रावल बीड़द पत, लख खरचे लख खाव
गढ़ा गढ़ा परसा पढ़ा, गहलोतों रा गीत
कुचेरा पटेल मोटे पट, सारा में अखतीज
गढ़ मण्डोवर रो गेहं, दीखै बाड़ी अंबरा
चुड़े मान्यो हैम नै, बीके चाहड़ राव"

–देवराज भट्ट, सोजत

राव महोत्सव मण्डोर

किसी भी त्यौहार व मेले को मनाने के पीछे कोई न कोई विशेष उद्देश्य रहा है। जिस प्रकार होली, दीपावली व रक्षाबंधन आदि अनेक त्यौहारों को मनाने का ऐतिहासिक कारण है उसी प्रकार मण्डोर क्षेत्र में निकलने वाली राव की गैर का भी ऐतिहासिक महत्त्व व कारण है। राव महोत्सव जो राव हेमा गहलोत द्वारा मण्डोर में भैरव स्थापना चैत्र कृष्ण एकम संवत् 1449 (09 मार्च 1392 मंगलवार) के दिन शुरू की गई एक ऐसी परम्परा है, जिसमें अपने इष्ट देव भैरव जो दुष्टों का नाश और शत्रुओं पर विजयी करने में सक्षम, के प्रति अटूट आस्था व विश्वास दर्शाता हैं। राव जो भैरव (ईसर) का प्रतिरूप है इसलिए राव को राजा कहा जाता है, जो सर्वशक्तिमान है। ऐसी मान्यता है कि लौकिक और अलौकिक शक्तियों के द्वारा जीवन में सफलता पाई जा सकती है लेकिन शक्तियाँ जहाँ स्थिर रहती हैं, वहीं अलौकिक शक्तियां हर पल, हर क्षण मनुष्य के साथ रहती हैं। अलौकिक शक्तियों को प्राप्त करने का स्रोत मात्र देवी देवताओं की साधना, उपासना शीघ्र फलदायी मानी गई है। तत्कालीन समय में निकलने वाली इस अनूठी परम्परा जो राव हेमा गहलोत की प्रसिद्धि के कारण इस गैर को राव की गैर/राव (राजा) की सवारी के नाम से प्रचलित हुई। प्रथम राव जी की गैर राव हेमा गहलोत के जीवन काल में ही ग्राम मंडोर (जूनी बस्ती मण्डोर) जो उनका निवास स्थान था से निकाली। जिसमें राव चयन प्रक्रिया राव हेमा गहलोत द्वारा ही शुरू की गई थी, जो आज तक जारी

है, जिसमें कोई ज्यादा तब्दीली नहीं हुई होगी। राव हेमा गहलोत शुरू की गई अपने इष्ट देव की इस परम्परा को सैकड़ों वर्षों से उनके वंशजों द्वारा संजोये रखा है।

राव हेमा गहलोत के वंशजों द्वारा सैकड़ों वर्षों से निकाली जाने वाली राव के राजा की गैर केवल मण्डोर क्षेत्र में ही निकाली जाती है, अन्यत्र नहीं, चाहे उनके वंशज अलग-अलग क्षेत्रों में निवास करते हों। यह मण्डोर पर से तुर्कों पर विजय कर हिन्दू राष्ट्र स्थापित करने का विजय जुलूस है जो राव हेमा गहलोत की परधानी में लड़ा गया था और अपने इष्ट देव काला गोरा भैरू व कुलदेवी बाणमाता में गहरी आस्था व आशीर्वाद से विजयी हुए थे। राव हेमा गहलोत द्वारा काला-गोरा भैरव व ब्राह्मणी माता की थापना के दिन चैत्र कृष्ण प्रतिपदा के दिन विजयी दिवस मनाया जाता है जिसे राव जी के सवारी या राव महोत्सव कहा जाता है। राव के राजा की चयन प्रक्रिया के तहत वर्तमान राव हेमा गहलोत के वंशज हेमसिंह जी गहलोत पुत्र धन जी गहलोत व सन्तोक सिंह ही गहलोत पुत्र तिलजी गहलोत आमली बेरा (बारी-बारी से) परम्परागत रूप से राव के राजा का चयन करते हैं। वर्तमान में चयन प्रक्रिया इन्हीं पूर्वजों के आमली बेरा मण्डोर पर होता है। राव के राजा का चयन वर्तमान में खोखरिया बेरा के नवविवाहित नवयुवक को चुना जाता है। मण्डावता बेरा के हथियार मय निवासियों द्वारा राव के राजा को सुरक्षा घेरे में ताकि कोई राव के राजा को स्पर्श ना कर सके, के बीच राव के राजा की गैर निकाली जाती है। इस राव महोत्सव में विभिन्न बेरों की गैरें—खोखरिया बेरा, मंडावता बेरा, भियाली बेरा, गोपी बेरा, नया पदाला बेरा, बड़ा बेरा, फूलबाग बेरा, नागौरी बेरा, मण्डोर खास, भलावता आदि के निवासी गैरों के रूप में विभिन्न परिधानों में ढोल-चंग की थाप के साथ होली फागुन गाते हुए सम्मिलित होते हैं।

मण्डोर का राव (राजा) जो परम शक्तिमान भैरव के र-से-रमश यानी सृष्टि का पालन करने वाले जो श्याम वर्ण है और उनके वस्त्र लाल है जो हाथ में खेट (मूसल) लिये हुए हैं। नवविवाहित गहलोत

युवा जो हष्ट-पुष्ट, ताकतवर व योद्धा जैसा दिखने वाला हो का चयन किया जाता है। जिस तरह विजयी होने पर प्रत्येक व्यक्ति का फूलमालाओं व गुलाल से स्वागत होता है उसी तरह राव के राजा चयन पश्चात् फूलों पत्तों से सुशोभित कर भैरूनाथ का खेट (मूसल) देकर उनके वस्त्र लाल कर जो शौर्य का प्रतीक है, केसरीया कंवर जी की पूजा की जाती है। पचरंगी पाग व सूर्य युक्त लाल पताका जो गहलोतों की पाग व ध्वजा है, के साथ हथियार बद्ध जो फूलों व पत्तों से ढके होते हैं, सैनिकों के रूप में हजारों लोगों के हुजूम के साथ राव के राजा की गैर निकलती है। मण्डोर में स्थित अलग-अलग बेरों से होली के फाग के साथ ढोल व चंग बजाते गाते हुए नये रंग-बिरंगे परिधानों में सजे समाज के हर उम्र दराज के हजारों लोग राव के राजा की गैर में सम्मिलित होते हैं। राव के राजा को एक विशेष सुरक्षित घेरे में रखकर फूलों से ढक हथियारों के साथ नाचते कूदते वियजी उद्घोष—

"आयो लडणों फतह कर दो"
"आयो लडणों फतह कर दो"
"आयो लडणों फतह कर दो"

(वर्तमान में विजयी घोष अपभ्रंश व अश्लील हो गया। सैकड़ों वर्षों से श्मशान में मन्दिर होने व पुरुषों द्वारा ही राव महोत्सव में भाग लेने का कारण रहा होगा।)

जो याद दिलाता है कि मण्डोर किले पर लड़ा गया युद्ध जिसमें किसान सैनिकों ने तुर्कों को मार भगाया था यह भी संकेत देता है कि भैरू मंदिर के ऊपर पहाड़ी पर लड़ा गया इन किसान सैनिकों द्वारा अपने इष्ट देव भैरव से प्रार्थना है कि इस युद्ध में हमारी फतह कर दे। आज भी राव महोत्सव में जोश की परम सीमा, विजयी होने की खुशी का संचार, रोंगटे खड़े करने वाली अद्‌भुत अनुभूति, भविष्य में होने वाली कष्टों से लड़ने की शक्ति की कामना के साथ ढोल व चंग की थाप पर लयबद्ध, मद-मस्त, हर्षोल्लास, थिरकते पांव, आनन्द विभोर, अद्‌भुत अंदाज में नाचते-कूदते, हाथ में लहराते हुए लाठी, हॉकी के बीच राव के राजा की

सवारी जो तत्कालीन विजय की याद दिलाता है, शायद ऐसा ही हर्षोल्लास से तत्कालीन समय में वीर शिरोमणि राव हेमा गहलोत ने अपने इष्ट देव भैरव व कुल देवी बाण माता से विजयी आशीर्वाद लिया होगा। मण्डोर काला गोरा भैरू व बाण माता/ब्राह्मणी माता मंदिर पर धोक लगाते हुए नाग कुण्ड में राव के राजा के कूदने के बाद साथी गैरियों द्वारा डोली से राव के राजा को पानी से नहलाने उपरांत विसर्जित होते हैं। आम नागरिकों में मण्डोर के भैरू जी की मान्यता जोधपुर व जोधपुर के बाहर बसने वालों में उत्तरोत्तर बढ़ी है। शादी के बाद अवश्य भैरू जी की जात (पूजा) लगाने आते हैं। आज भी भैरू जी मंदिर के पुजारी इन ही राव हेमा गहलोत के वंशज है। एक ऐसा युद्ध हुआ जो भैरव के आशीर्वाद से शत्रु का समूल नाश व एक ऐसी संस्कृति का मिलाप है, जिसमें आस्था के साथ-साथ विजयी होने का संकेत भी है।

राव महोत्सव प्रेरणा देता है कि संसार में उन्हीं महापुरुषों का जीवन सफल और अनुकरणीय माना जाता है जो प्राणीमात्र की सुरक्षा, सेवा व भलाई के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। राव हेमा गहलोत ने भी प्रधान होते हुए इन्हीं मूल्यों आधारित परम्पराओं का निर्वाह करते हुए युद्ध कौशल में वीरता से युद्ध कर विजयी पताका फहराई। ऐसे योद्धाओं के पार्थिव शरीर भले ही नष्ट हो जाएं किन्तु उनकी बहादुरी, त्याग, समाज कल्याण के लिए तत्पर रहने के कार्य से उनका नाम अमर हो जाता है। ऐसे कालजयी महापुरुष किसी देश, जाति, सम्प्रदाय की ही सम्पति नहीं होते वे सम्पूर्ण जगत के हृदय सिंहासन पर विराजमान होकर भावी पीढ़ी के लिये प्रेरणा स्रोत बन जाते हैं। उनका जीवन किसी भी आलोक-स्तंभ से कम प्रकाशमान नहीं होता क्योंकि वे भटके हुए प्राणियों को सन्मार्ग सुझाते हैं और अपने कर्तव्यपरायणता के बल पर प्रजावत्सल प्रधान तथा कुशल प्रशासक के रूप में महान आदर्शों की स्थापना करते हैं।

राव हेमा गहलोत की इन महान उपलब्धियां के फलस्वरूप उनकी कीर्ति पताका सर्वत्र फहरा रही है। राव महोत्सव केवल मारवाड़ में ही नहीं

अपितु सम्पूर्ण राजस्थान के लिये हर्षोल्लास का एवं गौरव पर्व कहा जा सकता है, जिसमें धर्म, जाति, सम्प्रदाय का अनोखा संगम है। ऐसे अद्वितीय व्यक्तित्व और महान् कार्यों के धनी राव हेमा गहलोत को याद कर व उनके द्वारा स्थापित राव महोत्सव परम्परा को हमारे जीवन में भी एक ऐसी आत्मशक्ति जागृत करने का उत्साह जगा कि हम भी उनके पद-चिह्नों पर चल कर उन्हीं के आदर्शों को अपने जीवन के सांचे में ढाल सकें। राव के रूप में ऐसी पुण्यात्मा का स्मरण आज के युग में आवश्यक भी है। शत्रुओं के आक्रमण को रोकने के लिए एक अजेय प्रहरी के रूप में अपनी अहम् भूमिका अदा की व सदियों तक अविरल चलने वाली परम्परा की शुरुआत की ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए महान् कार्य प्रेरणा का स्रोत बन सके। ❑

मारवाड़ के इतिहास में सैनिक क्षत्रियों की भूमिका

12वीं सदी तक जातीय व्यवस्था इतनी सुदृढ़ हो गयी थी कि सभी लोग अपनी जाति अनुसार कर्म करते थे परन्तु सैनिक क्षत्रिय माली या राजपूत माली कृषि के साथ-साथ आवश्यकता पड़ने पर सैनिक कर्म व भवन निर्माण में अपना बहुमूल्य योगदान देते थे। इस जाति की महिलाओं ने भी राजपरिवार में धाय के रूप में अपना अतुल्य योगदान दिया था जिसमें रूपाधाय, गोरांधाय, हस्तीबाई गहलोत व अनेक धामांओं का उल्लेख इतिहास के पन्नों में विस्मृत है। सामान्य कार्य समझ इनके बारे में लिखा ही नहीं गया। मण्डोर में आगमन के साथ ही अपना क्षत्रिय धर्म निभाते हुए राव चूंडा जी के पिता वीरम जी के प्रधान दोलियो गहलोत जो वीरम जी व जोया के बीच गायों को लेकर हुए झगड़े में दोलियो गहलोत व माणक हरीयो के मारे जाने का उल्लेख मिलता है। (मारवाड़ रा परगनां री विगत—प्रथम भाग—नारायण सिंह भाटी—पृ. सं.-17 से 20)। राव चूंडा जी का पालन-पोषण करने वाली धाय का उल्लेख मिलता है परन्तु धाय का नाम नहीं लिखा है। इसी कड़ी में राव चूंडा जी को राज दिलाने में राव हेमा गहलोत का अतुल्यनीय योगदान था जो कि समाज की राव बहियों में उपलब्ध है। राव हेमा गहलोत के पौत्र राव चाहायड़ पुत्र राव थीरपाल जो जोधपुर के संस्थापक राव जोधा जी के पुत्र राव बीका जी का धाभाई था ने राव बीका जी के साथ 1522 आसोज सुदी 10 (30 अगस्त 1465, बुधवार) जोधपुर से गोरा भैरव की मूर्ति लेकर प्रस्थान किया और कोडमदेशर बीकानेर में मूर्ति की स्थापना की। आज भी यहां के पुजारी इन्हीं राव चाहायड़ जी के वंशज है। अलग-अलग बहियों में व पुस्तकों में सैनिक क्षत्रिय समाज के लोगों का सैनिकों के रूप में योगदान मिलता है।

शेरशांह के आधिपत्य से मेहरानगढ़ की मुक्ति में सैनिक क्षत्रियों की भूमिका—

बरस 3 राव मालदे विषे (संकट काल में) पीपलाण रै भाखरै रहौ। संवत् 1603 सूंर पातसाहि मुवौ। पातसाहि लोक जोधपुर रै गढ़ थाणों हुतौ सु गढ़ खाली मेल नै खवास खांन मसादअली कन्है जावै खवास पुरै गया। वांसै गढ़ खाली पड़ीयों थै। मंडोर रा मालीयां नु खबर हुई गढ़ खाली छै। तरै माली माहे पैढ़ा। राव जी नु पीपलाण खबर मैली। (मारवाड़ रा परगनां री विगत—प्रथम भाग-2, नारायण सिंह भाटी, पृ. सं. 58)

संवत् 1600 पातसाह सेरसांह सू हार राव मालदेवजी सिवाणा री भांखरा गया संवत् 1603 सलेमसाह मुवो जद तुरक, जोधपुर रो गढ़ छोड़ खवासपुरै नसेदलीखां ख़वासखां कनै गया. मडोवर रा माली गढ़ में आया, रावजी नूं खबर दिवी, रावजी जोधपुर पधारिया पछै बरस सात रावजी मेड़ता नूं लागा। (बांकीदास री ख्यात, पं. नरोत्तमदास स्वामी, पृ. सं.-13)

राव मालदेव की वात व मुहता नैणसी के अनुसार खवास खां जोधपुर को छोड़कर कहीं चला गया था। जब मण्डोर के मालियों को खवास खां की जोधपुर में अनुपस्थिति की सूचना मिली तो उन्होंने जोधपुर दुर्ग पर अधिकार कर लिया एवं राव मालदेव को इसकी सूचना प्रेषित की। सूचना पाते ही राव मालदेव ने पीपलाण में अपनी नवगठित सेना सहित प्रयाण किया। सं. 1602 (1545 ई.) में मालदेव ने जोधपुर पर अधिकार कर लिया। (जोधपुर राज्य का इतिहास—मांगीलाल व्यास, पृ. सं.-143, परम्परा भाग 11 पृ. सं.-46)

जोधपुर महाराजा राव मालदेव ने शेरशाह सूरी के युद्ध हारने के बाद

पीपलाण सिरोही के पहाड़ों में शरण ली थी। वहां वे तीन वर्षों तक रहे। उस समय दिल्ली के बादशाह शेरशाह सूरी ने मेहरानगढ़ को अपने अधीन कर खवास खां को अपना किलेदार नियुक्त किया। ख्यातों के अनुसार खवास खां मसाद अली से मिलने चला गया तब किला खाली देख सैनिकों क्षत्रियों ने कब्जा कर लिया। यहां यह सोचने वाली महत्त्वपूर्ण बात कि खवास खां अकेला या कुछ सैनिकों के साथ गया होगा, परन्तु किले की सुरक्षा हेतु जरूर सैनिकों की टुकड़ी छोड़ी होगी। ऐसे ही किले को खाली छोड़ के जाना यह अनुचित लगता है। इस घटना को बहुत ही साधारण घटना के रूप में इतिहास में दर्ज किया है जो एक विचारणीय बिन्दु है। जब मण्डोर के सैनिक क्षत्रियों को सूचना मिली कि मेहरानगढ़ के किलेदार खवास खां उपस्थित नहीं है तब उन्होंने अवसर का फायदा उठाकर आक्रमण कर अपने अधिकार में लिया होगा ऐसी परिस्थिति में मेहरानगढ़ किले में अधिकार के समय एक छोटे युद्ध की स्थिति पैदा हुई होगी। जिसमें दोनों तरफ के सैनिक इस युद्ध में फोत हुए होंगे। सैनिक क्षत्रियों का इस मेहरानगढ़ किले पर कितने दिन अधिकार रहा यह भी नहीं लिखा है परन्तु अनुमान के तौर पर हम कह सकते हैं कुछ दिनों या सप्ताह तक अवश्य रहा होगा। राव मालदेव को सूचना मिलने पर नवगठित सेना लेकर जोधपुर आए वापस मेहरानगढ़ किले को अपने अधिकर में लिया।

अपने पूर्वजों द्वारा किये गए महान् कार्यों की पुनरावृत्ति कर अपने शौर्य, निर्भिकता, पराक्रम, रणकौशल का परिचय दिया और अपनी सूझ-बूझ व आत्मबल से मेहरानगढ़ किले पर से शेरशाह सूरी के अधिकार को समाप्त कर विजय पाई। इन सैनिक क्षत्रियों द्वारा अपने पूर्वजों वीर शिरोमणि राव हेमा गहलोत के पदचिह्नों पे चलते हुए अपने शौर्य, राष्ट्र भक्ति व स्वामी भक्ति का परिचय दिया।

"महाराजा उदयसिंह के कुंवर शक्तिसिंह के साथ हूंण पट्टे दिया तब धाभाई अचला गहलोत को साथ भेजा। (मालदेव की ख्यात उदयसिंह जी मोटा बही नं. 15670, 15669, पृ. सं.-33/498, 30/45

रा.प्रा.वि.प्र. जोधपुर)"

(जोधपुर की ख्यात—रघुवीर सिंह एवं मनोहर सिंह राणावत, पृ. सं.-128)

भाटी सुरताण रा इतरा काम आया (पृ. सं.-145)

5. गेलोत गांगे (महाराजा सूरसिंह के समय)

कंवर जी गजसिंह प्रथम व राजा किशन सिंह जी रो साथ काम आया सं. 1671 रा जेढ़ सुद 8 (मई 25, 1615 ई.)

गहलोत राधो (पृ. सं.-151)

धरमत का युद्ध सं. 1714 भादवा सुद 10 (18 अगस्त 1657, मंगलवार) काम आये (महाराजा जसवंत सिंह के समय)

1. गहलोत धाय भाई पिरागदास चांपा रो

1. गहलोत कलो (पृ. सं.-228)

फुटकर आसामी

गहलोत देदो (पृ. सं.-231)

श्री महाराज उज्जैन (उजीण) री राड़ माह सू देस पधारिया तरै इणरो साथ थो

हुजदार ख्वास पासवान वगैरह

1. गहलोत चुतरो (पृ. सं.-234)

(यही चुतरो जी गहलोत सं. 1730 (1673 ई.) जमरोद के युद्ध में काम आये इनका थान किशोर बाग के पास, अण्डर ब्रिज, मण्डोर रोड पर भोमियां जी के थान के नाम से स्थापित है)।

सं. 1735 फागुन सुद 15 (फरवरी 15, 1679 ई.) कोस 8 लाहे हवेली में डेरा हुआ। इतरो साथ लश्कर में था तिण री विगत सिरदार

गेहलोत जुगराज ढाल दरबार (पृ. सं.-297)

गेहलोत बापो हाल दरबार ने रघुनाथ (पृ. सं.-301)

महाराजा जसवंतसिंह जी रो ईंतरो साथ दिल्ली में राठौड़ रूपसिंह भारमलोत री हवेली में थका संवत् 1736 रा सावण वद 3 ताई—जुलाई 16, 1679

10 देश रे साथ मांहला

1 गहलोत धनराज चुतरा रो (पृ. सं.-320)

(जोधपुर राज्य की ख्यात—रघुवीर सिंह, मनोहर सिंह राणावत)

चुतरा गहलोत की महाराजा जसवंतसिंह प्रथम को सहायता–जमरूद में शहीद—

चुतरा गहलोत के बारे में जनश्रुति प्रचलित है—महाराजा जसवन्त सिंह प्रथम सन् 1638 ई. में गद्दी पर बैठे तब से सन् 1665 ई. तक वे दक्षिण प्रवास में रहे। वहां छत्रपति शिवाजी से उनका गाढ़ा परिचय हो गया। इसका विवरण ज्ञात होने पर मुगल सम्राट औरंगजेब ने उन्हें गुजरात भेज दिया परन्तु वहां से वे असंतुष्ट होकर सन् 1670 ई. में जोधपुर चले आये। औरंगजेब सदैव हिन्दू शासकों से भयभीत रहता था इसलिये वह महाराजा को कहीं और भेजना चाहता था। इसका अवसर भी आ गया। काबुल में पठानों ने विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह को दबाने महाराजा जसवन्त सिंह को भेजा गया। इनके पीछे राजकुमार पृथ्वीसिंह शासन कार्य संभालने लगे। औरंगजेब की ललचाई दृष्टि मारवाड़ की ओर थी। उसने पृथ्वीसिंह को शाही दरबार में बुलाया तथा शाही पोशाक पुरस्कार में दी। उस विष भरी पोशाक के पहनने से राजकुमार पृथ्वीसिंह तड़प-तड़प कर मर गया। मारवाड़ में शाही थाना बैठा दिया गया। जोधपुर की जनता भयग्रस्त हो गई। महाराजा को इसकी सूचना किस प्रकार भेजी जाय इसका कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। उस समय चुतरा गहलोत ने काबुल जाने का बीड़ा उठाया। वे इससे पहले भी काबुल जा चुके थे।

शाही मार्गों पर जगह-जगह मुगलों के थाने थे। ऐसी दशा में प्रत्यक्ष जाना संभव नहीं था। इसलिए चुतरा गहलोत ने एक भेड़ा (मेंढा) मारा और उसकी अन्त्येष्टि कर दी। उनके परिवार वालों ने शोक के वस्त्र धारण कर लिए। जोधपुर में प्रचलित हो गया कि चुतरा गहलोत का स्वर्गवास हो गया है। उधर चुतरा गहलोत सर मुंडा गेरूए धारण कर काबुल को घुड़सवार रवाना हो गए। चुतरा गहलोत के काबुल पहुँचने पर महाराजा जसवन्तसिंह को औरंगजेब के नापाक विचारों का ज्ञान हुआ। महाराजा जसवन्तसिंह प्रथम ने बादशाह को चेतावनी दी। साथ ही बादशाह कहीं चुतरा गहलोत के परिवार वालों पर अत्याचार न करे, इसका ध्यान रखते हुए उन्होंने जोधपुर सूचना भेजी कि चुतरा गहलोत देवत्व को प्राप्त हो गए हैं तथा उन्होंने मुझे दर्शन दिया है। परन्तु चुतरा गहलोत पुनः जोधपुर लौटकर न आ सके। वि. सं. 1730 श्रावण सुदी 4 (मंगलवार, 18 जून, 1673 ई.) को 43 वर्ष की आयु में पेशावर के समीप खैबर घाटे के नीचे जमरूद के युद्ध में उन्होंने प्राण गंवाए। महाराजा जसवन्तसिंह प्रथम को इससे बड़ा दुःख हुआ और उन्होंने काबुल से लेकर मंडोर तक उनकी स्मृति में थान बनवाये। मंडोर में जोधपुर मंडोर सड़क पर 4 मील के पास चुतरा गहलोत के प्रतीक भेड़े का जहां दाह संस्कार किया गया तथा जो थान बनाया गया वह आज भी भोमियाजी के नाम से पूजा जाता है क्योंकि चुतरा गहलोत पुनः लौटकर नहीं आये थे तथा मारवाड़ में किसी वीर के मरने पर उनको 'भोमिया' कहकर पूजने की प्रथा है। (सैनी क्षत्रिय समाज का इतिहास—श्री बलदेव सिंह कच्छवाह—"आजाद" पृ. सं.-60, 61)

चुतरा संवत् 1730 (1673 ई.) में महाराज के पास जमरूद में मरा। महाराज ने उसकी यादगारी में जमरूद से लेकर मंडोर तक जहां उसका घर था बारह बारह कोस पर पक्के चबूतरे बनवाये और फरमाया कि आयंदा जो बाग बनें उसमें चुतरा के नाम का भी 1 चबूतरा बनावें यह बात अब तक जारी सुनी है।

पेशावर में महाराजा जसवन्तसिंह प्रथम के साथ उमराव अधिकारियों

आदि की सूचियाँ (पृ. सं.-78)

(पत्र 159 अ)

1. गहलोत बाघो ढोल्या रे कोठार (पृ. सं.-83)

बाजे हीडागर लोक न नायक (पृ. सं.-119)

गहलोतो के पट्टे

गहलोतो रा पट्टा संख्या 1729 (1672 ई.) सुधां (पृ. सं.-228)

(पत्र 167 ब)

500 रु. गहलोत बाघो भाई 4 मनोहर रा। हेसे 4 छै देवलियों जोधपुर हवेली रो गहलोत

(श्री मनोहर गोरां धाय के पति हैं)।

(जोधपुर हुकुमत री बही सतीशचन्द्र, रघुवीर सिंह, जी.डी. शर्मा, पृ. सं. 228)

जसधारी गोरां धाय का राजपरिवार के लिये त्याग—

मारवाड़ के राजकीय गीत (धूंसा) में वीरांगना गोराधांय टाक का उल्लेख—

मुकन जैदेव गोरां जसधारी,
धिन दुरगो राखियो अजमाल ।।8 ।।

जसधारी वीरांगना गोरां धाय टाक ने सफाई कर्मचारी का स्वांग भर दिल्ली के शाही पहरे में से बालक महाराज अजीतसिंह राठौड़ को कूड़े कचरे की टोकरी में लेकर सपेरे मुकंददास खींची को सौंपा था। उन्होंने प्रसन्नता पूर्वक अपने बालक को अजीतसिंह की जगह सुला दिया ताकि बादशाह औरंगजेब बालक महाराजा अजीतसिंह को मारने की इच्छा करे तो उनका लड़का ही मरे। युद्ध के पश्चात् बादशाह उस बच्चे को ले गया और अपनी पुत्री जेबुन्निसा बेगम की देख रेख में मुसलमानी ढंग पर पाला

पोसा। यह बनावटी राजकुमार (मौहम्मदी राज) फिर 10 वर्ष की आयु में दक्षिण के युद्ध के समय प्लेग में बीजापुर में मरा। यह धाय (फोस्टर मदर) मंडोर की सैनिक क्षत्रिय जाति के धाओं मनोहर गोपाल भलावत (गुहिलोत) की स्त्री थी। इसकी बनवाई बावड़ी (वापी) जोधपुर शहर में पोकरण हवेली से सटी हुई गोरंधा (गोरांधाय) बावड़ी है इसकी छः खम्भों की स्मारक छतरी पब्लिक पार्क के पास कचहरी रोड़ पर है। (जोधपुर राज्य का राष्ट्रीय गीत—1947 ई. पृ. सं.-17, 18)।

सम्पूर्ण इतिहास जानकारी हेतु पढ़ें—जसधारी गोरां धाय—आनंद सिंह परिहार

अजीत विलास में भी एक जगह दो भाई **गहलोत धनो और भीवो** का वर्णन पृ. सं.-164 इस प्रकार है—

प्रधान चापांवत मुकनदास सुजारासिघोत ने रूघनाथ सिंघ चापांवत रै दौलत खाना में चूक हुवो। उदावत परतापसिंघ राजसिंघोत किया। दोनू भायां ने मारीया। सु दोढ़ीबारे मुकनदास रा राजपूत बैढा था। तिण में गहलोत भीवों ने...धनो दोड़ दोढ़ी में पेढ़ गया (घुस गये) सु उदावत परतापसिंघ ने मारीयों ने परतापसिंघ रो पिरोयत सिवराम भीवां धंना नु मारीया नै परतापसिंघ जी ने गढ़ उपर सू पोल रा मूढा आगे छै यह घटना सं. 1764 (1707 ई.) की है।

महाराजा विजयसिंह के सामने मराठा जयप्पा सिंधिया को मार्ग से हटाने के लिये हत्या करने की योजना बनाई। नागौर में निवास कर रहे चौहान सांईदास के सैनिक दस्ते के केसर खां खोखर और **कान्हा गहलोत** नामक दो सैनिकों को इस कार्य के लिए नियुक्त किया। इन दोनों में योजना स्वरूप स्नान करते हुए जयप्पा सिंधिया पर हमला कर घायल कर दिया लेकिन वह बच नहीं सका। 25 जुलाई 1755 ई. में जयप्पा की मृत्यु हो गई खोखर केसर खां व **कान्हा गहलोत** को मराठा सैनिकों ने दोनों को पकड़कर मार डाला। (जोधपुर राज्य का इतिहास—शिवदत दान बारहठ पृ.सं. 34 व 35)।

महाराजा मानसिंह को लखजी परिहार का सहयोग—

(महाराजा मानसिंह) श्री हजुर मोतीमहल में विराज्या रहै। ऊतमवरणा री दछा रांखै (उन्मत्तता की दशा बनाई रखते हैं।) रसोड़ा सु तासली (भोजन का थाल) आवै सो मेल देवै। पछै मरजी हुवै तरै थोड़ा घणा अरोगै। कबूतर मोकला कनै राखै सो रसोड़ा सूं जिनस आवै सौ पैला कबूतरां नू चुगाया पछै आप अरोगै। सो अेक दोय वार कबूतर मर गया। जद पछै रसोवड़ा रसोवड़ा सूं जिनस आयोड़ी अरोगता नही नै ढब सूं बारै नखाय देता। केई वार दोय-दोय च्यार-च्यार बिन तांई लांधण काढ देता। (भूखे रह जाते) खिजमतदारी में **झाराबरदार माली लखौ** रहै। ऊण नै समझाय दीयौ सौ ऊण रा घर सूं रोटियां आवै जिण मांह सूं रेहण दैवै (उस खाने में से बचाकर रखता है।)। सु ढब सूं हजुर अरोग लेवै। झाराबदार लखै उण बखत में श्री हजूर की घणी तन मन सूं बंदगी कीवी। (महाराजा मानसिंह री ख्यात ग्रन्थाक 133 रा. प्रा. वि. प्र. जोधपुर, पृ. सं.-115)।

झाराबरदार **लख जी** के वंशज श्री सत्यनारायण जी परिहार व ढलसिंह जी परिहार के अनुसार उस समय हुए किसी बड़े झगड़े में लख जी के गर्दन पर इतना गहरा घाव हुआ फिर भी लख जी अपने घोड़े पे सवार होकर घर तक पहुँचे और उनका सिर धड़ से अलग होकर, उनके रावला बेरा, जहां निवास स्थान था, वहां गिरा। इस स्थान पर आज भी देवली बनी हुई है इनकी पूजा परिहार परिवार द्वारा भोमिया जी के रूप में की जाती है। भोमिया लख जी के साथ उनकी पत्नी पूंजला नाडी मगरा, मण्डोर पर सती हुई। वहां पर तीन छततियां बनी हुई हैं; जिसमें एक इनके कुलदेवी सुंधा माता की दूसरी लखजी की व तीसरा सती स्थल है। इन छतरियों का जीर्णोद्धार हाल ही में इनके वंशजों द्वारा किया गया।

1891 की मरदुमशुमारी में राजपूत माली के रूप में जनगणना हुई थी। बाद में 6 फरवरी 1937 में सैनिक क्षत्रिय जाति के रूप में मान्यता मिली। इसमें विशेष योगदान **सीताराम जी कच्छवाह** द्वारा किये गये पत्र

व्यवहार के कारण संभव हुआ। मोतीसिंह की [illegible] द्वारा समाज के सबसे पहले "सिंह" लगाना शुरू किया परन्तु राजमारवाड़ द्वारा [illegible] आर्थिक दंड 50/- दिनांक 11-06-1917 लगाया गया। 22 [illegible] 1957 को मोतीसिंह जी का देहांत हो गया परन्तु यह कहा गया कि मोती तो चले गए किंतु अपनी आब "**सिंह**" को हमारे नाम में लगाने के लिए छोड़ गए। जब तक हमारे नाम में सिंह लगता रहेगा मोतीसिंह जी की संघर्ष की अमर कहानी दोहरायी जाती रहेगी।

खास पासवानों आदि को अलग-अलग काम सौंपे गये।

जलूसी पंखा और खास मोहर रखने का काम गहलोतों को। (पं. विश्वेश्वर नाथ रेऊ—मारवाड़ का इतिहास, पृ. सं.-182)

सैनिक क्षत्रिय समाज के लोगों द्वारा मारवाड़ के राजतंत्र के प्रत्येक काल में ऊँचे-ऊँचे ओहदों पर रहकर अपनी सेवाएं दी। जिसमें प्रमुख—प्रधान, मेहतर (राजकीय विशेष दर्जा), धाय, कामदार, गजधर, मुत्सवी, खवास पासवान, कोतवाल, दरोगा, झाराबरदार, पासवान, ढोल्या रे कोठार अधिकारी, ढाल बरदार, जनाना ड्योढीदार आदि पदों पर सैनिक क्षत्रिय समाज के सभी गोत्र के पुरुषों के नाम दर्ज हैं। राजतंत्र पर जब भी संकट के बादल छाये तब अपनी बहादुरी, वीरता, बुद्धिमत्ता व त्याग से राजतंत्र को बचाने में अपना अतुलनीय , अविस्मरणीय योगदान दिया। निर्माण के क्षेत्र में भी समाज के पुरुष व महिलाओं द्वारा कुएं, बेरे, बावड़िया, महलों को बनाने में अहम भूमिका निभाई। हम कह सकते हैं कि सैनिक क्षत्रिय समाज का सैनिक, किसान, इंजीनियर, ठेकेदार (गजधर) के रूप में जोधपुर के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

"जोधपुर, बीकानेर तथा नागौर नगरों की रक्षार्थ उनके चारों ओर (माली) क्षत्रियों जातियों को ही बसाया गया था। जो युद्ध के समय रक्षा की प्रथम पंक्ति का कार्य करती थी। जोधपुर के बाहरी क्षेत्र में कान्हीयाला (चैनपुरा) का भूखण्ड पहले एक ब्राह्मण का था उसे वहाँ से हटा कर बनाड़

दिया गया ताकि इस रक्षा पंक्ति में सैनी (माली). क्षत्रियों को छोड़कर अन्य जातिय व्यक्ति न रहे।'' (बलदेव सिंह कच्छावाहा—सैनी समाज का इतिहास—पृ. सं.-38)

चीन युद्ध (1900 ई.) में जोधपुर के कर्नल सर प्रतापसिंह के नेतृत्व में जिस सरदार रिसाले ने भाग लिया उसमें रिसालदार चतुरसिंह कच्छवाहा व उनके छोटे भाई धूड़सिंह दफेदार के रूप में थे। उन्होंने काबुल व सीमान्त क्षेत्रों के छोटे-मोटे युद्धों में भी भाग लिया था। यहां एक बात ध्यान देने योग्य है कि जोधपुर राज्य के रिसाले में केवल युद्ध राजपूत ही लिए जाते थे।

अंग्रेजी सरकार भी सैनी जाति को युद्ध प्रवीण जाति मानती थी। प्रथम महायुद्ध में पंजाब से दो सैनी रेजीमेंट थी व दक्षिण से करीब-करीब दस हजार सैनी योद्धा थे। (बलदेव सिंह कच्छवाहा—सैनी समाज का इतिहास, पृ. सं.-38)।

(मारवाड़ की कौमों का इतिहास व रीत रस्म—रिपोर्ट मर्दुमशुमारी सन् 1891 ई., भाग तीन, पृ. सं.-559)।

अपने स्वर्णिम इतिहास पर समाज के लोगों को अपने आप में गौरवान्वित होना चाहिए।

❑

सैनिक क्षत्रिय समाज द्वारा खुदवाये गए बेरे व बावड़ियाँ

राव हेमा गहलोत ने मण्डोर में बसने से पहले केवल नागादड़ी व नागकुण्ड का ही वर्णन मिलता है। अन्य बेरे व बावड़ियों का नहीं। राव चूंडा जी द्वारा राव हेमा गहलोत को मण्डोर में कृषि भूमि माफी दी थी। कृषि हेतु राव हेमा गहलोत ने अपने द्वारा थापित भैरू मंदिर के पास कुएं का निर्माण करवाया, जिसका उपयोग कृषि हेतु किया गया। कालान्तर में यह भैरू बेरा भेरू बावड़ी के नाम से कहलाने लगा।

''बावड़ी का निर्माण कब और किसने करवाया इसकी जानकारी नहीं मिलती है। यह बावड़ी भैरू मंदिर के पास होने के कारण भैरू बावड़ी कही जाने लगी। जब महाराजा अजीत सिंह ने वि. सं. 1776 (1719 ई.) में मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया तब इस बावड़ी का भी जीर्णोद्धार करवाया गया था।'' (महेन्द्र सिंह तंवर—मारवाड़ का पुरातत्व और स्थापत्य, पृ. सं.-85)

आज भी मण्डोर उद्यान में कुल 11 बेरे, बेरी व बावड़ियों है इनमें कहीं ऐसे बेरे बावड़ियां है जिनके वास्तविक नामों से परिचित नहीं है जैसे—

1. नर्सरी बेरा (नर्सरी के पास होने के कारण)
2. मसाणिया बेरा (सैनिक क्षत्रिय समाज के पुरातन श्मशान के पास)
3. झाला राव बेरा
4. नांरगी बेरा

वीर शिरोमणि हेमा गहलोत

इस पावन भारत भूमि पर, एक -एक से बढ़ कर वीर हुए
दुश्मन दल को निर्बल करने, जो दो-धारी शमशीर हुए

जय भैरव कालकराल बोल, जिस दम रण में डट जाते थे
उस समय कलेजे दुश्मन के, घबरा कर के फट जाते थे

यह गाथा है उन वीरों की, जो अरि हित काल कराल हुए
दुश्मन की फौजों की खातिर, जो महाकाल विकराल हुए

नर वीरों की क्या बात कहें, कणकण बिखरी गाथाएं हैं
सिर कटने पर भी झुके नहीं, ऐसी अनगिनत कथाएं हैं

लेकिन इन से भी बढ़-चढ़ कर, हैं वीर नारियां यहां हुईं
हंसकर जौहर करने वाली, पद्मिनी सरीखी कहां हुईं

पन्ना और गौरा धामांएं, बलिदान पुत्र का करती हैं
जब एक बार बढ़ जाती हैं, फिर पीछे कदम न धरती हैं

ऐसी ही वीर नारियों की, अनगिन गाथाएं अमर यहां
वीराएं जिनने धर्म हेतु, कर दिये प्राण भी नज़र यहां

दो-चार नहीं, दस-बीस नहीं, अनगिन वीराएं हुईं यहां
रजथान धरा को छोड़ कहो, ऐसी मिसाल है और कहां

जो आन-बान पर अड़ी रही, मैं उसकी गाथा गाता हूं
हे वीर पूजकों आज तुम्हें, हेमा की कथा सुनाता हूं

लेकिन इस गाथा से पहले, थोड़ा इतिहास सुझाता हूं
उस समय यहां जो हालत थी, वो भी तुमको बतलाता हूं

जिस समय हिन्द की धरती पर, मोहम्मद गौरी चढ़ आया था
अल्लाहो-अकबर का नारा, जब चारों ही दिस छाया था

जब क्षत्रिय सैनिक बन्दी कर, गजनी ले जाए जाते थे
या धर्म बदलते थे उनका, या सिर कटवाये जाते थे

या फिर गुलाम की सूरत में, बिकवाते थे बाजारों में
इतिहास बताता है बन्दी, बंट जाते थे दीनारों में

थी रजपूतों में फूट यहां, इतिहास गवाही देता है
इस लिए पराजित होते थे, यह बच्चा-बच्चा कहता है

ऐसी ही संकट की वेला, जब क्षत्रिय कुल पर छाई थी
जब अपनी होकर भी धरती, तब अपनी थी न पराई थी

जब यवनों की बर्बर फौजें, काटक कर टूटा करती थीं
जब अबलाओं की मर्यादा, हंस-हंस कर लूटा करती थीं

कुछ ऐसी संकट की घड़ियां, क्षत्रिय वीरों पर आई थीं
जब गौरी के टिड्डी दल ने, इस भू पर लूट मचाई थी

जब भारत से बन्दी क्षत्रिय, गजनी ले जाये जाते थे
फिर जबरन धर्म बदल उनका, मुस्लिम बनवाये जाते थे

ऐसी किंकर्तव्य परिस्थिति में, कुछ क्षत्रिय निर्णय करते हैं
हम जाति बदलते हैं अपनी, जिस कारण बिरथा मरते हैं

यह युक्ति पूरी करने को, कुछ ने इस तरह विचार किया
हम सबको तुम अपना कह दो, इक माली को तैयार किया

इस तरह क्षत्रियों ने मिल कर, खुद को माली कहलाया है
और आतताइयों से ऐसे, पूरा कुल वर्ग बचाया है

फिर सब समाज ने मिल कर के, बाईस नियम तैयार किए
क्षत्रिय कुल से कुछ हट कर के, कुछ नये बिन्दु अनिवार किए

अब से हम हैं माली समाज, अब आगे से कुछ नया करें
हैं मांस और मदिरा वर्जित, इस पाप कर्म से सदा डरें

हम धर्म अहिंसा का पालें, सारे जीवों पर दया करें।
जो सद्कर्मों से अर्जित हो, वह कर्म हमेशा किया करें॥

कुछ ऐसे नियम बना कर के, माली समाज एकत्र हुआ
वो ध्येय अभी तक कायम है, ऐसा प्रसिद्ध सर्वत्र हुआ

कुछ ऐसी ही बातें हैं जो, इतिहास हमें बतलाता है
क्षत्रिय से माली बनने का, सारा वृत्तान्त सुनाता है

लेकिन इन सब से भी बढ़ कर, हम ऐसी बात बताते हैं
इस कुल में वीरा एक हुई, अब जिसकी गाथा गाते हैं

गवरी सौलंकी का पुत्र, हेमा गहलोत सयाना था
भय क्या होता है जीवन में, उसने ये बात न जाना था

है एक दिवस की यह घटना, जब गवरी अपने खेत पे थी
थी कर्म निरत अपनी धुन में, श्रम-सीकर बूंदें रेत पे थी

इतने ही में ऐसा घटना-क्रम, कुछ काल-चक्र यूं फिरता है
खरगोश एक घायल हालत, उसकी गोदी में गिरता है

जब गवरी देवी ने देखा, घायल खरगोश प्रकंपित है
किसने इसका यह हाल किया, वह चिंतित और अचंभित है

इतने में देखा पीछे ही, कुछ लोग दौड़ते आते हैं
ये ठाकुर राणा जयसिंह हैं, कारिंदे नाम बताते हैं

हमने गोफण से वार किया, कस कर के इस पर मारा है
झटपट खरगोश हमें दे दो, इस पर अधिकार हमारा है

गवरी बोली कुछ दया करो, तुमने इक जीव सताया है
मैं कभी नहीं दूंगी इसको, ये मेरे शरणे आया है

जब गवरी ने यह बात कही, ठाकुर के सेवक क्रुद्ध हुए
वे उचके, लपके और झपटे, यानी वो तत्पर युद्ध हुए

फिर बात-बात में बात बढ़ी, दोनों ही ज़िद पर अड़े रहे
गवरी थी दृढ़ निश्चय वाली, ठाकुर सेवक भी खड़े रहे

यूं करते-करते म्यानों से, तलवारें बाहर निकल गईं
खन खनन खनन खन खनकाती, जैसे रुद्राणी उबल गईं

जब हेमा ने इस तरह वहां, अपनी मां को अड़ते देखा
इक नन्हा जीव बचाने को, निधड़क होकर लड़ते देखा

तब वीरा ने हुंकार भरी, और ठाकुर को ललकारा है
ऐसा लगता है तुम सबने, मरने का मता विचारा है

यह नन्हा सा खरगोश यहां, जो मां की गोद में आया है
तुम हत्यारों से डर कर के, देखो कितना घबराया है

तुम इसे छीन ले जाओगे, तुमने ये बात विचारी है
तुम अबला समझ रहे मां को, बस ये ही भूल तुम्हारी है

मैंने बस जाति बदली है, पर क्षात्र-धर्म नहीं बदला है
जीवों पर दया भाव वाला, वह पुण्य-कर्म नहीं बदला है

खरगोश चाहिये यदि तुमको, तो पहले मुझसे युद्ध करो
मैं तुम पर बनके गाज़ गिरूं, मत इतना मुझको क्रुद्ध करो

सुन कर के हेमा की वाणी, ठाकुर को क्रोध अपार हुआ
तज क्षात्र-धर्म की मर्यादा, वह लड़ने को तैयार हुआ

यूं आनन-फानन में दोनों, तलवारें जोर चलाते हैं
हेमा के वारों के आगे, ठाकुर पीछे हट जाते हैं

यूं बहुत देर तक युद्ध हुआ, हेमा ने मानी हार नहीं
जो धर्म काज डट जाते हैं, वे करते अन्य विचार नहीं

इस तरह बचाया जीव एक, जो मां के शरणे आया था
था घायल और डरा सहमा, हेमा ने उसे बचाया था

इस घटना की सारी बातें, लोगों के कानों तक पहुंचीं
इस कोने से उस कोने तक, अन्यान्य ठिकानों तक पहुंचीं

तब बालेसर इन्दाकुल के, राजाओं ने यह काम किया
वह पद प्रधान दे हेमा को, मण्डोवर उसको सौंप दिया

यह एक नहीं, दो चार नहीं, ऐसी अनगिनत कथाएं हैं
जिन पर हर पीढ़ी गर्व करे, ऐसी अनेक घटनाएं हैं

वह हेमा ही था कि जिसने, राठौड़ों का सम्मान किया
हर कदम सहायक बन उनका, हर बाधा को असान किया

श्री चूण्डाजी का राजतिलक, हेमा ने अपने हाथ किया
बदले में मण्डोवर पट्टा, उनने हेमा को सौंप दिया

निज मातृभूमि की रक्षा हित, ऐबक पे हमला बोल दिया
अपनी मर्याद बचाने को, माली वीरों ने युद्ध किया

यह गैर रावजी की जो कि, अब तलक निकाली जाती है
यह है प्रतीक उस झगड़े का, ये थाती पाली जाती है

माली समाज समझो इसको, उन वीरों की संतान हो तुम
भारत मां के सच्चे सेवक, कुल गौरव हो, अभिमान हो तुम

है हेमा का इतिहास अमर, यह तो बस एक इशारा है
मैं तो बस इतना कहता हूं, उज्जवल इतिहास हमारा है

-श्यामसुन्दर भारती

भैरव भक्त हेमाजी गहलोत

हेमो हाजर माँ धके, मन्त्रतज मांगे एक।
मूँ जावू मरुधरा, कुण राखेला टेक॥1॥

थो बीन पालक न निसरे, पल पल धाऊ तोय।
साथे मारे चालनो, आशिष देवो मोय॥2॥

ममता माँ री मोकली, समता री मण्डार।
साथे थारे चालनो, भजले बारम्बार॥3॥

भगती में सगती घणी, मायड़ मानी बात।
हालो मरुधर साथ में, करे न कोई घात॥4॥

सरवर तरवर पाल पर, रहसी भैरव साथ।
भजन करेला भाव सू, उठा सिर मारो हाथ॥5॥

हेमो हट छोड़ी नहीं, पकड़िया मां रा पग।
आशीष आप आपजो, नहीं छोडूंला पग॥6॥

मायड़ साथे आवियो, भैरव हेमा साथ।
भगती सकती सो करे, सिर पर भैरव हाथ॥7॥

भैरव भगती कारणे, ऊँचो ओदो पाय।
मन ने माफिक वो करे, सुख समपत घर माय॥8॥

ऊंचे ओदे थरपियो, पडियारो री पोल।
प्रधोन पद उण राज में, पुरो निभावे कोल॥9॥

अखतर बखतर शमवीर, सोवे हेमा हाथ।
मन भैरव देव वो, उणरो माथे हाथ॥10॥

हाथी होदे वो फिरे, भैरव मूरत साथ।
पल पल निरखे देव ने, देव सेवना साथ॥11॥

सेवा सो सकती मिले, सांच रहे चित माय।
सांचा री व्हे जीत सदा, हिये विचारो आय॥12॥

थरपत भैरव मंडोर, पूजे हेमो आप।
सुबे शाम री चाकरी, आशिष देवे धाप॥13॥

अबकी में आवे कोम, भैरव उचारो नोम।
माली हेमे परखियो, उणरो सरियो कोम॥4॥

चित चामुण्डा रै चढ़ियो, हेमो हाथज जोड़।
कोड़ करे पल पल घणा, माँ माथे री मोड़॥15॥

आगल लारे छोड़ता, करता माँ री सेव।
भैरव उपर भरोसो, भगता रा वे देव॥16॥

सरदा सू भैरव भजे, पूरण उण रो कोम।
हेमे भजियो प्रेम सू, व्हेगो उणरो नोम॥17॥

ऊंचे अम्बर में चमकियो, हेमा थारो नोम।
भैरव भक्ती सो पायो, सरियो थोरो कोम॥18॥

पडियारी परधोनगी, आमी घणीज कोम।
चूण्डो जद चवरी चढ़े, दी मनडोवर धोम॥19॥

धन धन भैरव देव ने, हुइ अनहोनी बात।
दोउ कुल में पूजीजो भैरव थे परभात॥20॥

–मोहनलाल गहलोत, बालोतरा

हेमा गहलोत : कीर्ति गाथा

कवर कुचेरा रो पूत, प्रगटियो वाण भाण।
प्रीत पाले मन भावे, सबरे मन री जाण॥1॥

परिजन पेला आविया, पाछे हेमा आय।
मनडोर प्रधोन बणियो, थरपत हुओ जाय॥2॥

पदमराव पायो पूत, गवरी देवी मात।
कुचेरा धरती धनधन, गहलोता री जात॥3॥

घर मंगल प्रीत घनेरी, प्यारो पदमो राव।
पूत परमारथ कारणे, जग चावो हमराव॥4॥

चहु दिश चावी चाकरी, इन्दा लिवी पहिचाण।
पदज परधोन सोपियो, खरी करी पहिचाण॥5॥

आगल पाछल सोचतो, आछी करतो वात।
पत मिनखा री जाणतो, कदे न करतो घात॥6॥

पारख उण पूरी करी, जाणी ईन्दा पीड़।
मनडोवर ज्यू जावसी, कोण मिटासी पीड॥7॥

ऐ था आबल बायरा, लेसी शासन खोस।
पाणी पेली पाल करि, आप हुआ निरदोस॥8॥

सामी जाय बधाय लो, राठोड़ा री जात।
चून्डोजी चवरी चढ़े, करे न कोई घात॥9॥

सैण सगाई कारणे, पाले पूरी प्रीत।
अवकी में आवे कोम, सत पुरषों री रीत॥10॥

मरुधर वासी मोकला, भेला हुआ उण काल।
मार भगाओ मुसलानु, तिलक हुवेला भाल॥11॥

गाय बसे धर्म रहेला, रहसी थारो मान।
नीतर जासी माजनो, कुण देवेला मान॥12॥

एकट हुआ इण करणे, जबर मचाई बूंब।
पडियार ने राठोड़ो, चावा हुआ खूब॥13॥

टीका में मन्डोर देय, धाक जमी पडियार।
राठोड़ो रे मेल सो, हेमु किधो वैवार॥14॥

तुरकानी ताती भजी, पडियारण रो मान।
गुहिल हेमा रे कारण, रह हिन्दवाणी शान॥15॥

आभा तारा तोड़िया, करयो भोम उजास।
भैरव देव ने भजन्तो, हेमो करे उजास॥16॥

थरपत राज राठोड़ा, मण्डोवर री भोम।
भैरव देव सहाय कर, सुखी हुई हर कोम॥17॥

माली हेमा ने बख्शीष, मंडोर तलिये भोम।
कर माफी उण जमी पर, सुखी माली कोम॥18॥

फल फूल बाग बगीचा, मालिया लियो हाथ।
मेहलों माही जावतो, कोइ न पकड़े हाथ॥19॥

हार बणाय पुगावतो, मेहमा होत अपार।
मौन सहित में जावता, आछो व्हे वेवार॥20॥

–मोहनलाल गहलोत, बालोतरा

हेम-गाथा

पत अरियां रा पाड़िया, जलम भौम जूंझार।
गुहिले हेमो गूंथियो, देस थापणा द्वार॥

वीर हेमा तूने ऐसा चक्रव्यूह गूंथकर दुश्मनों के जोश व हिम्मत का खात्मा किया, अपनी कर्मभूमि के लिए जूझारू होकर दुश्मनों की शक्ति को क्षीण करते हुए विदेशियों को सदा-सदा के लिये मार भगाया। अपनी कर्मभूमि मण्डोर में पुनः हिन्दू राष्ट्र की स्थापना की। मण्डोर को विदेशी आततायियों से आजाद करवाया। 100 वर्षों की विदेशी दासता से मुक्त कर मण्डोर की धरती को एक नवजीवन दिया। हे वीर! तुमने हिन्दू राष्ट्र के निर्माण के द्वार खोल दिए, तभी तो कहा—हे तुरकाणी से हिन्दवाणी की, गढ़ पलट किया, धन्य है माँ जिसने ऐसे वीर को जन्म दिया। अपनी माँ गंवरी की तरह गरजने वाले वीर हेमा धन्य है! यह धरती तुम्हें नमन करती है।

दीयौ जीवण देस नै, मंडोवर मधु मास।
आप्यौ ताज चूंडा नै, आगम नै इतिहास॥

राष्ट्र को नया जीवन दिया, मण्डोर को हरा-भरा रखा, आपने चूंडा को ताज दिलाने में सहयोग किया। आने वाले समय को एक स्वर्णिम इतिहास दिया।

मंडोवर की धरती पर अमन चैन कायम कर किसानों के जीवन में खुशियाँ भर दी, अपने कर्मस्थली को हरा-भरा कर दिया। अपनी बुद्धिमानी से आने वाली पीढ़ियों को वीरता, बलिदान का संदेश दिया, एक ऐसा

इतिहास रचा जो सदियों-सदियों तक याद रखा जाएगा।

हेमा एक सच्चा युगपुरुष है जिसने मानवता व अधिकार की रक्षा करने का पुनीत कार्य किया है।

मरणौ परजा कारणौ, राज करण री रीत।
चूंडा रहसी आप रै, जुग जुग चरणां जीत॥

प्रजा के लिए मर जाए, यही राज करने की रीत है। तभी तो रावों ने भी कीरत गीतों में बहादुरी, बुद्धिमान की प्रशंसा की है। चूंडा जी ने आपकी वीरता पर पुरस्कृत कर मंडोवर की धरती को तोहफा दिया जहाँ पर आज भी वीरों की खेती होती है। इन वीरों ने समय-समय पर राठौड़ों की सहायता कर अपने कुल का नाम रोशन किया है।

त्याग, बलिदान को तत्पर रहने वाले ये वीर हमेशा तुम्हारे चरणों में शीश नवाते हैं। जब कभी राज्य पर संकट के बादल छाये व प्रजा पर दुश्मनों ने अत्याचार किए तब तुमने बड़ी बहादुरी से मुकाबला किया, तभी तो युगों-युगों से तुम्हारे चरणों को पूजते हैं। मण्डोर की धरती की मिट्टी धूल नहीं है यह तो चंदन है, वीरों के रक्त का वंदन है। जो प्रत्येक काल में तुम्हारे जीत का वंदन करती रहेगी।

चांद सुरज तारा जितै, हिमगिर रा पाखाण।
कीरत गाथा पदम री, चावा गेहलोतांण॥

जब तक चाँद, सूरज व तारे रहेंगे, जब तक हिमालय के पहाड़ स्थिर हैं, हे पदम के पुत्र हेमा! तेरी कीर्ति के अध्याय युगों-युगों तक प्रसिद्ध और वीरत्व की प्रशंसा करेंगे। हे पदम पुत्र हेमा! तेरी तो कीरत ही न्यारी है, तुमने अपने पिता पदम यानि कमल की तरह खिल कर इस धरती को, जो तुम्हारे नाम का पर्याय है, पृथ्वी से इन विदेशी आक्रान्ताओं से मुक्त किया। तभी से गेहलोतों के गौरव गीत आज भी माँ अपनी लोरियों में सुनाती हैं। हेमा जैसा वीर बनो और जरूरत पड़ने पर अपने वतन के लिये शहीद हो जाओ। धन्य है वो माँ जिसने ऐसा वीर पैदा किया जिसके सदियों से सैनिक

क्षत्रिय समाज कीर्ति के गीत गा रही है।

मुगत वरण मंडोवरा, धरती देवै धीक।
हेमो राखी है धरा, तेगां ऊपर तीक॥

तुम्हारे द्वारा ही मंडोर की धरती ने आजादी का वरण किया, ये धरती तुम्हें नमन करती है। हेमा तुमने इस धरा को सुरक्षित रखा है। तुमने मंडोवर की धरा को तलवार के ऊपर थाम के रखा है ताकि फिर कोई छीन न सके। मंडोवर की धरा के लिये पहले हेमा की तलवार से लड़ना होगा। तुम्हारी ओजस्विता से ही इस धरा को आजादी मिली। मण्डोवर की धरती का कण-कण आज भी उपजाऊ है। रक्त जो बहाया देश के लिए, ईश्वर के रूप में आज भी तुम्हारी पूजा होती है। अलौकिक दृष्टि से जरूर तुम देख रहे होंगे।

अपनी तलवार के जोर से तुर्कों को झुका दिया, मण्डोवर छोड़ने को मजबूर किया। इस धरती पर तो ऐसे वीर पैदा होते हैं जिनके सिर कटने के बाद भी तलवार से दुश्मनों को मौत घाट उतार देते हैं।

सिर फसलां लहलै जठै, जस री खेती जोय।
हेमाणी मंडोवरा, कदै न समवड़ होय॥

जहां सिर की फसलें होती है वहीं जस की खेती होती है। ये सिर की फसलें अपनी मातृभूमि के लिये सदैव तत्पर रहती हैं जो हमेशा काटने व कटने के लिए तैयार रहती हैं। मंडोवर में क्षत्रिय खेती जो करते हैं वो सिर की खेती है। जो क्षत्रिय अपनी मातृभूमि के लिये सिर अर्पित करता है उसे हमेशा यश मिलता है। यह मंडोवर हेमा का है जिसे कोई निष्फल नहीं कर सकता, यह धरती कभी सपाट बंजर नहीं होगी, केवल सिरों की ही खेती होगी। क्षत्राणियाँ यहां वीरों को ही पैदा करती रहेगी। स्वतंत्रता के लिए सिर देने वालों को हमेशा आशीष ही मिलती है।

हेमो तप जस राज रौ, अवरां कियौ उदार।
जुग जूंझारू राज नै, जन मन करै जुहार॥

हेमे ने अपने तप-जस से तुरकाणी से हिन्दवाणी कर मण्डोर का उद्धार किया, विदेशी आक्रांताओं से मुक्ति दिलाई । अपने जूझारूपन से राज दिलवाया। इस मातृभूमि की जनता ऐसे वीर को प्रणाम करती है। मण्डोवर की धरती में ऐसे वीर पैदा हुए जैसे—हेमा गहलोत! ऐसे जूझारू व्यक्तित्व सदैव-सदैव के लिये प्रेरणादायक हो जाते हैं, जो प्राणीमात्र की सुरक्षा सेवा और भलाई के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। विजयी पताका फहराते हैं। भले ही उनके प्राण निकल जाये पर जन-मन में ऐसी अमिट छाप छोड़ देते हैं, जिनके सदियों तक वीरता के गुण पाये जाते हैं। तभी तो ऐसे वीर की प्रत्येक वर्ष हर्षोल्लास, उमंग व भैरव के रूप में पूजा की जाती है। जन-मन यही तो कहता है, हे वीर! हर वर्ष हमें ऐसी शक्ति से लबालब कर देना ताकि आने वाले कष्टों से मुकाबला कर सकें क्योंकि बुरे समय में ऐसे वीर ही उद्धार करते हैं और जन-मानस के हृदय सिंहासन पर विराजमान होकर भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत बन जाते हैं।

सांम ध्रमी धन सूरमा, कीधी नह कीं मांग।
मंडोवर रे मायंने, रगतां भर दी रांग॥

मातृभूमि के स्वामी को धन्य है जिसने अपने तप-बल से मण्डोर की धरती को आक्रांताओं से मुक्त किया। ऐसे सूरमा की कोई चाहता नहीं होती, न ही अपने राज से आशा रखते हैं। ये बिना ढाल के भी युद्ध लड़ते हुए अपना मस्तक देने में सदैव तत्पर रहते हैं। ऐसे वीर जब भी तलवार उठाते तो अपनी प्यास रक्त से बुझाते हैं, पानी से नहीं । इन वीरों का लक्ष्य विजयी होना है चाहे कितना ही रक्त क्यों न बहाना पड़े।

आतम ग्यानी अतबळी, धरे ईसवर ध्यान।
सुरगां लेगौ जस चंवर, हेमो गेहलोत महान॥

आत्मज्ञानी, अतिबली, ईश्वर का ध्यान करने वाला, अपने इष्ट देव भैरव की कृपा से यश का चंवर अपने साथ स्वर्ग में ले गया। गेहलोत कुल के हेमा तुम वास्तव में महान हो, तुम्हें ईश्वर के समकक्ष रख प्रत्येक वर्ष

हर्षोल्लास से वंदन करते हैं। हे पदम पुत्र! आपकी बुद्धि, विवेक, त्याग व शौर्य से महानता के शिखर पर पहुँच गये। गहलोतों के शिरोमणि तुम जैसे कालजयी महापुरुष का जन्म बंजर धरा को भी उपजाऊ बना देता है।

दूजा नै तप जस दियौ, जपिया रजवट जाप।
मापी पग मंडोवरा, योगी हेमो आप॥

हे पदम पुत्र हेम! तुमने दूसरों को तप-जस से सरोकार किया। हमेशा राज के प्रति आस्था रखी। अपने वीरत्व से दूसरों को नया जीवन दिया। पूरी मण्डोवर की धरती को अपने त्याग व बलिदान से सुरक्षित किया, पूरे मण्डोर को पैरों तले सुरक्षित रखा। घूम-घूम कर योगी की तरह शान्ति और सद्भावना का संदेश दिया। भक्ति और वीरता से ही तो तुमने मण्डोवर को सुरक्षित रखा तभी तो भैरव के प्रतिरूप में तुम्हारी पूजा होती है।

धन धोरा मंडोवरा, आन मान बलिदान।
लोही रँगिया लाडलां, रज कण राजस्थान॥

मंडोर के उन धोरों को धन्य है जो अद्वितीय, अनुपम है। अपनी आन-मान बलिदान से यहां के लाडलों ने इन धोरों को रक्त से रंग दिया। राजस्थान की मिट्टी के इन कणों को रक्त से लाल कर दिया, ऐसे वीरों को इस धरती के कणों ने सदैव इनका मान रखा है। मण्डोवर की भूमि को दुर्भाग्य से बचाने के प्रयास में सब कुछ न्यौछावर कर दिया। रक्त से रंगने वाले, हे धरतीपुत्र तुम्हारे रक्त से मण्डोवर की धरती धन्य हो गई। जिस पर आज भी समाज को मान है। यहां के वीर आज भी तुम्हारे वीरत्व पर गर्व करते हैं। मण्डोवर का कण-कण तुम्हारे वीर गीत गाता है।

सरसै धरती स्रम बळां, दरसण हेम उदात।
अरि नह नैड़ा आविया, भालां परसै भात॥

त्याग, बलिदान से यह धरती स्वयं के बल से विकसित हो रही है, हेम के दर्शन से हरी भरी हो रही है। दुश्मन तो नजदीक नहीं आते हैं क्योंकि हेमा भाले के ऊपर भोजन परोसता है तो उसके नजदीक कौन आयेगा। हे

पृथ्वी (हेमा)! तुम्हारे दर्शन करने आज भी हजारों की संख्या में मण्डोवर की धरती पर राव उत्सव के दिन आते हैं व तुम्हारे द्वारा सिंचित इस धरा को नमन करते हैं।

जड़ियौ नग क्रोडीक ज्यूं, धर रजवट सिर भेस।
सांची हिम्मत सिंघरी, दिस दिस मांनै देस॥

हे हेम! तुम प्रजा व राज के सिर के मुकट पर सुशोभित होने वाले करोड़ों का नगीना हो। तुम्हारी हिम्मत, शौर्य, बलिदान, बुद्धिमता, दूरदर्शिता का दसों दिशाओं में गुणगान हो रहा है। सभी तुम्हारे विश्वास व जीत का गुणगान कर रहे हैं, जो प्रतिवर्ष राव महोत्सव में देखने को मिलता है।

थें हर बिखै हरोल में, दियौ देस नै प्राण।
गाईजै जस गीतड़ा, रजवट गहलोतांण॥

सेना की अग्रिम पंक्ति में होने से तुम्हारा विशेष मान है, तुम्हारे जैसे योद्धा देश के लिए प्राण देने में तत्पर रहते हैं। ऐसे वीर-योद्धा के यश, शौर्य के गीत गाये जाते हैं। अग्रिम पंक्ति (हरावले) में अपने प्राणों की बाजी लगाकर मंडोवर की रक्षा की। तुम्हारे क्षत्रित्व के हर गीत में शौर्य को गाया जायेगा। गहलोतों के जस (यश) के गीत हर युग में गाये जायेंगे।

मरवां नूं कितरा मरै, जीवै आप जतत्र।
जो मर रैवै जीवता, पूजै पांव वतत्र॥

यूं तो जगत में कई जन्म लेते हैं और मर जाते हैं, पर धन्य हैं वे जो देश के लिए मर का अमर हो जाते हैं।

ऐसे वीर अपनी मातृभूमि के लिए शहीद होने के लिए जन्म लेते हैं। ऐसी पुण्य आत्मा मर कर भी अलौकिक शक्ति के रूप में मौजूद रहती है। जिन्हें जनमानस सदियों तक पूजता है। हे वीर हेमा! आज भी तुझे भैरव के रूप में श्रद्धा से पूजा जाता है। अलौकिक शक्ति राव के राजा के रूप में तुम्हारे वीरत्व इष्ट देव के प्रति भक्ति का जीवन्त दृश्य दिखाई पड़ता है। तुम्हें ईश्वर के रूप में प्रति वर्ष सजीव किया जाता है।

वीरों के प्रति जनमन सदा आदर प्रदर्शित करता है हृदय पटल पर उनकी छवि विराजमान रहती है।

समय उलट्टण सील है, राज उलट्टण रीत।
जूंझारू जीवट तणी, जावै न जुग सूं जीत॥

समय बदलता रहता है, राज की नीति भी बदलती है, राज भी बदलते हैं परन्तु जीवट के धनी जो अपनी धरती के लिए जूझारू हो गये उसने अपने जूझारूपन से यश को कमा लिया। वो जग से कभी खत्म नहीं होता, युगों-युगों तक पोषित होता रहता है। हे वीरत्व के स्वामी हेमा! तुमने भी राज की नीति पर विजय पाई, नीति को परिवर्तित किया। मण्डोवर के निवासियों को नया सवेरा दिया, नई उमंग, नई जिंदगी से सरोकार किया। धन्य है ऐसे जूझारू जीवट के धनी को जो अपने आत्मबल, बुद्धिमानी, वीरता के इस धरती में नये बीज बोये। ये बोये हुए बीज जिस खुशहाली से लहरा रहे हैं उसे सजीव देखा जा सकता है।

गुमै राज रीतां भलां, वगत वायरै वीत।
मंडोवर में हेम रा, गूंजे है गौरव गीत॥

राज की रीति नीति खत्म हो जायेगी समय की हवा के साथ लोकनीति, राजनीति परिवर्तित हो जायेगी, सब कुछ खत्म भी हो जाय पर मंडोर में हेमा के गौरव गीत कभी खत्म नहीं होंगे, गूंजते रहेंगे।

इस संसार में युगों-युगों से कितने ही मानव शरीर काल-कवलित हो गये, कितने ही भविष्य में होंगे, उनका कोई लेखा-जोखा न तो है न ही रहेगा। पर जिन वीरों ने देह को नश्वर समझ कर देश के लिए प्राणोत्सर्ग किया, ऐसे वीर हेमा की तरह अमर रहते हैं। जिन्हें सदियों-सदियों तक उनके गौरव गीतों की गूंज प्रस्तरों, पहाड़ों, बाग बगीचों, मानव के हृदय में सदैव-सदैव के लिए गूंजती रहेगी।

माळा ध्यावै हेम री, रख मंडोवर रीत।
चावा इण गेहलोत रा, गावै गंगा गीत॥

आज हम हेमा गहलोत के वीरत्व की माला फेरते हैं, क्योंकि मंडोवर में हेमा ने रीति का पालन किया। दुश्मनों को इस धरती से खदेड़ा तभी तो इस वीर पुरुष गहलोत का चावा करते हैं। गंगा में अस्थियां जरूर प्रवाहित हुई होगी परन्तु गंगा भी इसके वीरत्व के गीत गाती होगी। वीर हेमा तेरा नाम पृथ्वी है। परन्तु तुम तो ऐसे सौर जगत के वह ग्रह हो जिस पर हम लोग निवास करते हैं। अपनी मातृभूमि को गुलामी की जंजीरों से आजाद कराने वाले वीर चाहे मातृभूमि की गोद में सदा के लिये सो भी गये पर उन वीरों को अलौकिक शक्ति मान कर राव उत्सव के समारोह में उल्लास और हर्ष के साथ पूजा की जाती है। आज भी प्रत्येक वर्ष इस मण्डोवर के पहाड़ों से तुम्हारी गर्जना सुनाई पड़ती है।

गंगा जमना सुरसती, विंध्या हिम पाखाण।
बिड़द बखाणै राज रा, गौरव गेहलोताण॥

हेमा गहलोत के शौर्य के गीत गंगा, यमुना, सरस्वती भी गाती है। विध्यांचल और हिमालय भी हेमा के शौर्य का गुणगान करते हैं। राज भी इस गहलोत का सम्मान करता है।

जिस तरह पवित्र नदियां बहती रहती हैं उसी तरह तेरी कीर्ति, वीरता, शौर्य के गीत अविरल बहते रहेंगे। पीढ़ी-दर-पीढ़ी बहती नदी की तरह गीत गाते रहेंगे जो कभी भी थकने वाले नहीं है। ऐसे वीर जो लोगों के जीवन में खुशियाँ लाते हैं, वो सदैव उनके हृदय स्थल पर राज करते रहते हैं। अपने पूर्वजों द्वारा स्थापित मानव-कल्याण की इस धारा को वंशजों द्वारा हमेशा याद रखा जा रहा है।

चाँद सूर तारा जितै, है धरती असमान।
मुलक गावसी हेमरा, गुमै न गौरव गान॥

जब तक चाँद, सूरज, तारा धरती और आसमान है, तब तक यह देश हेमा के गुणगान करता रहेगा, कभी भी गौरव गान भूलेंगे नहीं । युगों-युगों तक गाते रहेंगे। राव महोत्सव में आज भी तेरे द्वारा थापित भैरव के

रूप में तुम्हारी वीरता, त्याग, बलिदान, शौर्य के गीत मद-मस्त होकर होली के फाग के साथ गाये जाते हैं। मण्डोर के सभी निवासी तुम्हारी वीरता के आगे नतमस्तक हैं।

तुमने क्षत्रिय समाज को सम्मान दिया उसके लिए ये धरा व समाज तुम्हारा हमेशा-हमेशा इन्हीं वीरत्व गीतों के साथ गुणगान करता रहेगा, वीर की वीरत्व तब तक जीवित है जब तक चाँद, सूरज और तारे मौजूद हैं।

माळी मातर भोम रा, फूलां की तकदीर।
अरपण सूरा आपनै, जसवाळी जागीर॥

हे वीर हेमा! तुम मातृभूमि के माली हो, इस धरा के रक्षक हो, इस धरती को खून से सींचा है। यदि तुम्हारे जैसे वीर इस धरा पर जन्म नहीं लेंगे तो कौन इस धरा को सींचेगा। इन फूलों का भविष्य इन वीरों के वीरत्व पर टिका है अन्यथा विदेशी आक्रांता फिर अपने अधिकार में ले लेंगे। ऐसे ही शूरवीरों को यह जागीर अर्पण है जो सिर कटवा कर इन फूलों की रक्षा करे। तुम यश की जागीर के जागीरदार हो। यश की जागीर तुम्हें निवेदित, सदा समर्पित है।

देवै माथा देस नूं, जग माथा झुक जाय।
दिवला झुपै ज देवरां, गौरव गाथा गाय॥

जब हम अपने देश के लिये अपने सिर देते हैं यानी रणभूमि में मरने के लिये तैयार रहते हैं तो अपनी वीरता के लिये इस जगत के लोगों का सिर झुक जाता है। ऐसे त्यागी, कर्त्तव्यनिष्ठ वीरों के जगह-जगह देवालयों में उनके नाम के दीपक जलते हैं। जो राष्ट्र के लिये अपने सिर देते हैं, उनकी कीर्ति, गौरव सदैव गाई जाती है। उनके वीरत्व की हर जगह चर्चा होती है। जैसे वीर हेमा!

दीवा तौ रातूं बळै, बुझ जावै परभात।
सूरा दीवा देस रा, रोज बळै दिन रात॥

दीपक तो रात को जलते हैं, सुबह बुझ जाते है, पर शूरवीर राष्ट्र क

दीपक होता है, वह दिन रात जलता रहता है। हेमा जैसे शूरवीर के व्यक्तित्व और कृतित्व का प्रकाश दैदीप्यमान रहता है। मण्डोवर के भैरू मंदिर में तुम्हारे द्वारा जलाये इस दीपक के ताप से जनमानस को शान्ति व शकुन मिलता है, तभी तो भैरू को पूजने दूर-दूर से लोग मण्डोर में आते हैं।

कैर खेजड़ी बांवला, बाजरियां रा पूंख।
ओल्यूं करसी आपरी, हंसता हंसता रूंख॥

कैर, खेजड़ी बावल, जो मारवाड़ के पेड़ है तथा बाजरियाँ के पूंख ऐसे ही हरे नहीं हुए हैं, इन्हें आपने अपने खून से सींचा है और हरा भरा किया है, इनको भी आपकी याद सताती रहेगी।

आसी पीढ़ी आगली, गासी गौरव गान।
ओल्यूं करसी आपरी, मंडोवर रै थान॥

अगली पीढ़ी आयेगी, आपके कीर्ति को बड़े चाव से गायेगी हमेशा आपको याद करेगी, मण्डोर के मेले में आपके कीर्ति के गीत गायेगी। आज भी इष्ट देव ईशर (राव) के रूप में तुम्हें याद किया जाता है। मण्डोर के इस मेले में तुम्हारे कीरत के गीत गाये जाते हैं। इस मेले में हर धर्म-सम्प्रदाय, जाति के लोग तुम से आशीर्वाद लेने आते हैं। तुम्हारे जैसा वीर बनने के लिए इन्तजार करते हैं। राव के राजा बनने वाला स्वयं व परिवार अपने आप तो धन्य मानता है। ऐसा एहसास होता है जैसे 627 वर्ष पीछे चले गये। ढोल, चंग की थाप साथ तुम्हारी कीर्ति के गीत गाये जाते हैं।

है सिंघणियां आज लग, निर्बीजां धर नांह।
वंश उजालक बाहुड़ी, मिळै झुंपड़ां मांह॥

आज भी शेरनियां हैं, सिंघाणियां हैं, जो वीर उत्पन्न करती हैं। क्षत्राणी गंवरी ने हेमा जैसे वीर को जन्म दिया। आज भी धरती निरबीज नहीं हुई है। वंश को उज्वल करने वाली ये क्षत्राणियां झोंपड़ों में मिल जायेंगी, महलों की तरफ देखने की जरूरत नहीं है। ऐसे वीर को महलों की दरकार नहीं है। धन्य है ऐसी क्षत्राणियां जो वीरों को जन्म देती हैं। नमन है इन वीरांगनाओं को।

हीया मो 'धर हरड़ को, नांख मती निस्सास।
वगत वगत रा वायरा, आतम बळ उज्जास॥

हेमा का नौजवानों को संदेश है कि हृदय में कायरता, डर आने ही मत देना हिम्मत से इसका मुकाबला करना। समय अच्छा भी आता है और बुरा भी। जो हवा का झोंका है निराश मत होना। आत्मबल के उजास से इस कायरता, डर को खत्म कर देना कमजोर मत होना, हिम्मत से समय का मुकाबला करना, ये ही वीरों की निशानी है। किस प्रकार कठिन समय में इन तुर्कों से हुई निराशा को हमने अपनी हिम्मत से सदैव-सदैव के लिये मार भगाया। यदि हम हिम्मत हार जाते तो इनका अत्याचार और बढ़ता।

सत्प्रवृतियां राज री, कीधा जी सद्काज।
अणथग लागै ऊजळा, सुरभित हिव्यौ समाज॥

राष्ट्र की सत्प्रवृतियां में हमेशा अपना योगदान देते रहें। यदि हम राष्ट्र के लिये ऐसा प्रेरणादायक कार्य करेंगे तो समाज भी उज्वल व सुगन्धित होगा।

हेमा देख तुम्हारा समाज आज कितना विकसित उज्वल है। प्रत्येक वर्ष तुम्हारी कीरत के गुणगान करती नहीं थकती है। ❑

परिशिष्ट

हरकावत गहलोत

हरको गहलोत राव हेमा गहलोत के पौत्र कुंभो जी का पौत्र था। इनके पिता बीधो जी मृत्यु उपरांत पत्नी शृंगारी माता हरको जी सती हुई थी। निवास स्थान बडलो बेरा था। (महाराजा सूरसिंह जी वि.सं. 1652–76, 1595-1619 ई.)

हरकोजी गहलोत की पुत्री पदमा अपने पति माड़ण जी परिहार व पदमा की सास लाडा पुत्री गोविन्द पालडिया (टाक) अपने पति दामोदर जी परिहार के साथ हरबुला बावड़ी बालसमन्द में सती हुई (महाराजा गजसिंह प्रथम वि. सं. 1676-1695, 1619-1638 ई.)

पिता दमोदर जी व पुत्र मांडण जी किसी युद्ध में खेत रहे थे इन सतियों की छतरियां आज भी हरबुला बावड़ी बालसमंद होटल के मुख्यद्वार के बायीं ओर स्थित हैं। जिसमें एक छतरी जीर्ण-शीर्ण हालत में है, दूसरी छतरी में महादेव जी का मंदिर बनाया हुआ है। (ख्यात बही राव मुरलीधर मथानिया) हरको का प्रतिष्ठित परिवार होने के कारण ही इनके वंशज अपने आपको को हरकावत कहने लगे हों।

'राजपूत माली'—मरदुमशुमारी–1891 ई.

जोधपुर में गहलोत माली जियादा है ये अपनी पीढ़ियां कुचेरे के गहलोत राव ईसरदास से मिलते हैं। जो तुर्कों के डर से मुसलमान हो गया था। उसकी औलाद में से हेमा माली जो बालेसर के ईंदों का परधान था राव चूंडाजी को मंडोर का राज दिलाने की कोशिश में शामिल था। उसको रावजी ने मंडोर में अमल हो जाने पर अपने इकरार के माफिक जो पौष वदि 10 संवत् 1449 (18 दिसम्बर 1392, बुधवार) को थाने सालोड़ी में किया गया था मंडोर के पास बहुत सी जमीन माफी दी थी। जिसके ऊपर राव रिडमल जी के पीछे जब कि राणा कुंभा जी का मंडोर में कब्जा हो गया था। उनके हाकिम अहडा हिंगोला ने कई लागें लगा दी।

हेमा की औलाद में चुतरा माली महाराज श्री जसवंतसिंह प्रथम के साथ काबुल गया। एक दिन महाराज ने काबुल के अनारों का बहुत बखान किया। चुतरा भी हाजिर था। उसने अरज की कि ऐसे अन्दर जोधपुर में भी पैदा हो सकते हैं। महाराज ने उसे मंजूरी देकर 1000 ऊंट काबुल की मिट्टी से भरे हुए जोधपुर भेजे। चतुरा ने उस मिट्टी से कागे में बाग लगाकर काबुली अनार नींबू और बेर पैदा किये और महाराज के हजूर से ले गया। महाराज ने अनार पसंद करके बादशाह के नजर किये। बादशाह के चखने वालों ने चखकर कहा कि मजा तो काबुली अनार का सा है लेकिन मुरदे की वास आती है महाराज ने यह बात कबूल कर ली क्योंकि कागे में मुरदे जलाये जाते हैं।

चुतरा संवत् 1730 (1673 ई.) में महाराज के पास जमरूद में मरा महाराज ने उसकी यादगारी में जमरूद से लेकर मंडोर तक जहां उसका घर था बारह-बारह कोस पर पक्के चबूतरे बनवाये और फरमाया कि आयंदा जो बाग बनें उसमें चुतरा के नाम का भी एक चबूतरा बनावें यह बात अब तक जारी सुनी है।

महाराज अभयसिंह जी के जमाने में अक्खा माली ने गुजरात से केतकी चम्पा और रायण यानी खिरनी के दरखत लाकर मंडोर में लगाये और वह वहां से एक लंगूर भी ले आया था। मंडोर के लंगूर उसकी नसल से समझे जाते हैं।

अक्खा से महाराज श्री अभयसिंह जी बर खिलाफ अपने बुजुर्गों के कि जो निहायत ही कम छोटे आदमियों से बोला करते थे बहुत सी बा[illegible] किया करते थे क्योंकि उनको वागात का बहुत शौक था। इस सबसे अक्[illegible] को बहुत घमंड हो गया था और वह मुश्किल से दूसरे आदमियों के स[illegible] बातचीत किया करता था। आखिर में औरत मरजाने से उसको जुनून

गया और हालत में वह बार-बार यही कहता था—"हूं ने महाराज ने अब्भो पंचोली" यानि मैं और महाराज और अब्भ पंचौली, महाराज का मरजीदान था और अक्सर हजूर में हाजिर करता था इसलिये अक्खा अपने ख्याल में महाराज और अब्भा पंचोली के सिवाय किसी को इस लायक नहीं समझता था कि उससे बात करें।

कुछ गहलोत माली मंडोर में तनापीर की कबर के मुजावर है वे मुसलमान हैं। मुरदे बारहवां भी करते हैं और चालीसवां भी, बारहवें में तो मालियों को जिमाते हैं और चालीसवें में फकीर वगैरह मुसलमानों को, कहते हैं कि इनका मोरिसआला पीर की कबर पर फूल चढ़ाया करता था और चढ़ावा भी लेता था। महाराजा उदयसिंह जी और सूरसिंह जी के जमाने में जब कि अकबर बादशाह के अजमेर में आने जाने से पीरों की मानता जियादा बढ़ी और चढ़ावा भी बहुत सा आने लगा तो कुछ मुजावर अजमेर से आकर तनापीर की कबर का दावा करने लगे। माली[1] मुसलमान हो गया पर उनको दखल न दिया। मुसलमान हो जाने से उसके भाई बन्धु ने उसके हिस्से की जमीन जब्त करनी चाही मगर उसने उनको भी यह इकरार करके राजी कर लिया कि मैं न्यात बहन स्वासनी और भाटों को बदस्तूर मानता और औसर मौसर जिमाता रहूँगा।

गहलोत माली[2] बीका जी के साथ मंडोर से काले गौरे भैरव के मूरत लेकर गया उसकी औलाद बीकानेर में है उनमें एक शख्स को जो महाराजा डूंगरसिंह जी का धाभाई था सोना भी मिला है।

मंडोर के मालियों की मारवाड़ की ख्यात में काबिल तारीफ है कि जब शेरशाह बादशाह ने जोधपुर फतह कर लिया था और राव मालदेव जी छप्पन के पहाड़ों में चले गये थे दो वरस पीछे मंडोर के मालियों ने बादशाह के मरने की खबर सुनकर पठानों को थाना उठा दिया और राव जी को खबर दी सो उन्होंने फौरन पहुँच कर जोधपुर में अमल कर लिया।

(1. दिल्ली के बादशाह अकबर के समय मुजावर बालू गहलोत के दो पुत्र जमाल व अहमद नाम रख मुसलमान बने। 2. राव चाहयड़ जो राव हेमा गहलोत के पौत्र)।

राजकुली या गोरी माली

नम्बर	खांप	नख	नाम मोरिसआला जो राजपूत से माली हुआ	नाम उसके बाप का
1.	चोहान	अजमेरा	कुसमा	रावत भालनसी
2.	चोहान	निरवाण	हरपाल	अनम्या रावल
3.	चोहान	सींघोदिया	बीलो	दूदा
4.	चोहान	जंबूदिया	हालू	हरपाल
5.	चोहान	सोनिगरा	कोड़ो	हरदेव राव
6.	चोहान	वागड़िया	देहड़	लखन
7.	चोहान	इंदोरा	सेडु	राजुक राव
8.	चोहान	गढवाल	बुड़लो	अन
9.	चोहान	पीलकनिया	देवसी	करमसी
10.	चोहान	खंडोलिया	गुलियो	रावत वेहड
11.	चोहान	भवीवाला	मोल्हो	कन्हड़दे
12.	चोहान	मकड़ाणां	क्वल	ब्रह्मादी राजा
13.	चोहान	कसूंभीवाला	हरु	रावत वाला
14.	चोहान	वूभणा	नरु	वाला रावत
15.	चोहान	सतरावल	जालप	जालाराव
16.	चोहान	सेंवरिया	कोडू	धाराराव
17.	चोहान	जमालपुरिया	छीतर	ऊदाराव
18.	चोहान	भराड़िया	सिघण	नरपतराव
19.	चोहान	सांचोरा	भिया	करमसी
20.	चोहान	बांवलेचा	मोहन	कालूराव
21.	चोहान	जेवरिया	पालो	नानगराव
22.	चोहान	जोजावरिया	पुहराज	लाडम रावत
23.	चोहान	खोखरिया	पांचो	करमा
24.	चोहान	वीरपूरा	ऊदो	कालु
25.	चोहान	पाथरिया	स्याराज	मालसी
26.	चोहान	मंडोवरा	गोदो	रेडा
27.	चोहान	अलूंध्या	उदेसी	आलणसीराव
28.	चोहान	मुधरवा	बुरसी	रावतकौशल
29.	चोहान	किरोडवाल	तोड़ो	मेहा
30.	चोहान	किरमी	कुसलो	तोडा

31.	चोहान	बड़खेड़ा	मैणो	सीया
32.	चोहान	मनवास्या	नरसिंघ	उरजन
33.	चोहान	देवड़ा	देवसी	रावतगुणपाल
34.	टाक	जुजाला दगधी	पूनो+	रावतमाणक
35.	टाक	मारोठिया	जैसिंघ+	रावतखोखा
36.	टाक	बणेठिया	बीखन+	रावतसहदेव
37.	टाक	पालडिया	पूना	धारसी
38.	टाक	नरवरा	बील्लो	रावत गुणपाल
39.	टाक	बोडाणां	हरदास	रावलाला
40.	टाक	कालु	नरु	रावतवाला
41.	राठोड़	कनवजिया	वालो ×	पाला
42.	गहलोत	कुचेरा	ईसर ×	आल्हाराव
43.	गहलोत	पीपाड़ा	जालणसी	रावत जैसिंघदे
44.	कछवाहा	कछवाहा	धांधू	रेवा रावत
45.	भाटी	सीघड़ासिंध मुल्तान के	वरहु	वरहपाल
46.	भाटी	जेसलमेरा	कंवरसी	रावत पदमसी
47.	भाटी	अराईया	कंवलसी	रावत वच्छ
48.	भाटी	सवालख्या	नगराज	राणा वड़सी
49.	भाटी	जादम	बाहड़ा ×	राजादेदड़
50.	सोलंखी	लुदरेचा	सधरी ×	सोभन
51.	सोलंखी	लासेचां	तिहुणो	रावत सिथल
52.	पड़ियार	जेसलमेरा	वांड़ो	सोभन
53.	पड़ियार	मंडोवरा	खींवसी ×	भादर रावत
54.	तुंवर	हाडी	कंवलसी	खेमसी
55.	तुंवर	खंडेलवाल	चाचो	राजा अंबरीख
56.	तुंवर	तूंधवाल	सोढो +	रावत धीरा
57.	तुंवर	कनवसिया	कान्हो	सोहड
58.	पँवार	धोकरिया	उल्हो	राणामलिया
59.	पँवार	रुणेचा	कमलसी ×	रावत काजला
60.	दईया	दईया	कुसलो	भगवान

* जिसके नाम के ऊपर × चिह्न है उसके या उसके बेटे पोते के दस्तखत सं. 1257 के लिखत पर हैं।

सैनिक क्षत्रिय समाज उत्पत्ति विवरण

	वंश	गौत्र	मूलपुरूष	कुलदेवी	कुलदेवी स्थान	ईष्ट देव	भैरव
परमार / सॉखला	चन्द्रवंशी	वशिष्ट	धमराज	सच्चियाय माता	ओसियां जोधपुर	माण्डवराय (सूर्य)	गोरा भैरव
चौहान / देवड़ा	सूर्यवंशी	वत्स	वासुदेव	आशापुरा	नाडोल	शिव	काला भैरू
कच्छवाहा	सूर्यवंशी	मानव गौतम	भगवान श्री राम	जमुवाय माता	जमवा रामगढ़ जयपुर	श्री गोपीनाथ	मनोहर
सोलंकी	चन्द्रवंशी	वशिष्ठ भारद्वाज	चालुक्यदे व	चण्डी, काली खीवज (क्षेमकरी)	खीवज– कढीती गांव–डीड वाणा क्षेमकरी– इन्द्रगढ़ बूंदी, लोदवा जैसलमेर	विष्णु	
गहलोत	सूर्यवंशी	वैजवापायन (विजयपान)	गुहिल	भैसाज माता बाणे वरी (बाण माता,रायक माता, ब्राह्मणी माता)	चित्तौड़गढ़ व मण्डोर	श्री एकलिंग जी (शिव)	काला गोरा
भाटी	चन्द्रवंशी	अत्रि	भट्टी	स्वांगिया (आवड़ आई नाथ)	पाट–गांव भादरिया जैसलमेर	श्री कृष्ण	
राठौड़	सूर्यवंशी	गौतमरय	राव सीहा मारवाड़	नागणे– चिया	नागण पचपदरा बाड़मेर	सीताराम	काला गोरा
परिहार	सूर्यवंशी	कपिल	नागभट्ट	चामुण्डा	मण्डोर	विष्णु भगवान	
तंवर	चन्द्रवंशी	अत्रि	जाउल	चिल्लाय माता योगे वरी योग माता सारंग माता	कुतुब महरोली मार्ग दिल्ली श्री डूंगरगढ़ बीकानेर	शिव	गोरा
टाक	नागवंशी सूर्यवंशी	कश्यप	टकनिक तक्षक	जीवण माता	रैणस सीकर नाडोल	ब्रह्मा	काला भैरू

No. 2240. **ORDER** Jodhpur, the 5th February, 1937.

SUBJECT.—Recording of Malis as "Sainik Kshatriyas" in Pattas and Development Department records.

Reference.—P. W. Minister's No. 481 Dated 22nd October, 1936.

His Highness has stated as his personal view that he has no objection to Malis being recorded as "Sainik Kshatriyas" in the Pattas or the Development records.

D. M. FIELD, LT.-COL.,
Chief Minister,
Government of Jodhpur.

हुक्म

श्री महाराजा साहिब बहादुर (हिज हाईनेस) ने अपना निज विचार प्रकट करते हुवे यह फरमाया है कि मालियों को पट्टों में या डेवलपमेन्ट के कागजात (रेकार्ड) में "सैनिक क्षत्रिय" दर्ज किये जाने में कोई एतराज नहीं है। फकत। ता० २३ जनवरी सन् १९३७ ई०

Mehkmakhas,
Jodhpur.
January 23, 1937.

PRINTED AT THE JODHPUR GOVERNMENT PRESS, JODHPUR.

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मारवाड़ राज्य का इतिहास, जगदीशसिंह गहलोत
2. सैनी क्षत्रिय समाज का इतिहास, बलदेव सिंह कच्छवाहा
3. भारतीय इतिहास का उन्मीलन, जयचन्द्र विद्यालंकार
4. भारतीय इतिहास की मीमांसा, जयचन्द्र विद्यालंकार
5. हमारा राजस्थान, पृथ्वीसिंह महता विद्यालंकार
6. रिपोर्ट मरदुमशुमारी राजमारवाड़–सन् 191, राय बहादुर मुंशी हरदयालसिंह
7. वीटू पन्ना मूल बही, मुहता नैणसी, नटनागर शोध संस्थान, सीतामऊ, मंदसौर
8. कविराज सिंघवी कानमल री ख्यात, नटनागर शोध संस्थान, सीतामऊ, मंदसौर
9. मारवाड़ रा परगना री विगत, डॉ. नारायणसिंह भाटी
10. मुहता नैणसी री ख्यात, आचार्य बद्रीप्रसाद साकरिया
11. मुहता नैणसी री ख्यात, रामनारायण दुग्गड़
12. मुहता नैणसी री ख्यात, ब्रजमोहन जावलिया
13. मुहता नैणसी री ख्यात, डॉ. मनोहरसिंह राणावत
14. मारवाड़ राज्य का भूगोल, जगदीशसिंह गहलोत
15. जोधपुर राज्य का इतिहास, मांगीलाल व्यास
16. महाराज श्री विजयसिंह री ख्यात, शिवदान बारहठ

17. महाराजा मानसिंहजी री ख्यात, डॉ. नारायणसिंह भाटी
18. राठौड़ राजवंश के रीति रिवाज, डॉ. वसुमती शर्मा
19. मारवाड़ का इतिहास (प्रथम भाग), पं. विश्वेश्वरनाथ रेउ
20. मारवाड़ का मूल इतिहास, रामकरण आसोपा
21. प्रगतिशील सैनिक क्षत्रिय, डॉ. रामस्वरूप सांखला
22. मारवाड़ के अभिलेख, डॉ. मांगीलाल व्यास
23. महाराजा श्री विजयसिंह री ख्यात, ब्रजेश कुमार सिंह
24. बांकीदास री ख्यात, पं. नरोत्तमदास स्वामी
25. राठौड़ा री ख्यात, कैलाशदान उज्जवल, पुष्पेन्द्रसिंह
26. जोधपुर राज्य की ख्यात, रघुवीरसिंह, मनोहरसिंह राणावत
27. राजस्थानी संस्कृति रा चितराम, प्रो. जहूर खां मेहर
28. Sainik Kshatriyan of Jodhpur, Satyendra Singh Gehlot

हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची :

1. राव रिडमल री वात, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
2. उदयसिंह जी मोटा राजा री ख्यात, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
3. गजसिंह री ख्यात, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
4. रावों की बहियों/ख्यात हस्तलिखित जो रावों के पास उपलब्ध है—
   (i) मुरलीमनोहर राव, मथानिया
   (ii) राजेन्द्रसिंह राव, बाड़मेर
   (iii) धनराज राव, बालेसर
   (iv) शंकरलाल राव, बीकानेर
   (v) देवराज भट्ट, कमला भट्ट, सोजत
   (vi) सोहनलाल राव, जोधपुर

❑❑❑

नागकुण्ड (मण्डोर) जहाँ राव की जलक्रीड़ा